अलख

अंक 11 वर्ष 2016 नवम्बर — 2016

विषय सूची

01.	अमूल्य निधि सम्पादकीय.......	01
02.	प्रवचन स्वामी विशेषानंद जी	02
03.	ततक्षण नोट किये गये वचन	10
04.	ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਨ ਭਗਤ	14
05.	ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਿਮਾ	15
06.	ਬਾਣੀ ਦਾ ਸਾਰ	17
07.	उपवास के कुछ नियम	21
08.	Dhammapada	22
09.	सत्संग सूचनाएं	24

अगला सत्संग

द्वितीय रविवार

11-दिसंबर-2016

एक नवजात बच्चा जो आज पैदा हुआ वो किसको पूजे ? हे प्रेमी ! वो करता परमात्मा का भजन *इसलिए हमेशा ध्यान रखना, उस चीज़ को पकड़ जो सम्पत्ती तूं मां के गर्भ से लाया। वो नाम पकड़ने का है और जितना भी हम यहां पकड़े बैठे हैं या पकड़ते हैं, हे प्रेमी ! यह सारी चीज़े टिकने वाली नहीं* ।

साभार पृष्ठ 11 से...

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय

सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर

(होशियारपुर) पिन-146105

website:-aavpashram.com

Email- aavpmahilpur@gmail.com

अमूल्य निधि

सम्पादकीय.....

भगवद प्रेमी सज्जनों,

किसी महात्मा के जीवन का एक उदाहरण इस प्रकार मिलता है कि एक किन्हीं महात्मा जी ने अपने सब शिष्यों को एकत्रित करके एक प्रश्न पूछा।

प्रश्न था, ''मानव जीवन की सबसे अनमोल निधि क्या है ?''

सब शिष्यों ने अपने अनुसार जबाव दिये पर महात्मा जी सब से असंतुष्ट दिखे। तब एक शिष्य ने विनम्रता पूर्वक उत्तर देने का आग्रह किया। गुरू आज्ञा पाकर उस शिष्य ने कहा, ''गुरूदेव ! आज तक आप के द्वारा दी गई शिक्षा में जो समझ आया वह यही है कि जीवन की सबसे अमूल्य निधि है सत्संग के वचन — जिनसे किसी भी बुरे व्यक्ति के जीवन में कभी भी बदलाव होकर वह भगवद भक्त हो सकता है।'' यह था वह जबाव जिससे महात्मा जी गदगद हो उठे।

हे प्रेमी ! ऐसे ही वचनों का संग्रह है यह मासिक पत्रिका जो सदा से भक्तों का मार्गदर्शन करती आई है।

''पत्रिका पढ़ बहु जन जगे,
आन मिले सत्संग।।''

अत: सत्संग का अधिकाधिक लाभ लेने एवं मन को संसार में भटकने से रोकने का प्रयास करते हुए यथासंभव पत्रिका पढ़ें, विचार करें एवं परमात्मा भजन में लगें ?

✯ ✯ ✯ ✯

प्रवचन स्वामी श्री विशेषानंद जी महाराज

बन्दउं गुरू पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि। महा मोहतम पुंज जासू वचन रवि करनी कर।।

प्रभु प्रेमी सज्जनों, **करता करे न कर सके गुरू किये सो होए। तीन लोक नौ खंड में गुरू से बड़ा न कोये।।** जब किसी तत्ववेता ने किसी अनुभवी ने किसी भेदी महांपुरूष ने गुरू महिमा के लिए, गुरू महाराज की कृपा को जानने के लिए कोई प्रयास, कोई बैठक, कोई समय दिया होगा, कुछ धारणा ऐसी बनाई होगी कि पता चले कि सही अर्थों में गुरू महाराज की महिमा या कृपा क्या है ? तो उसने अंतिम स्थिती में क्या पाया कि यहां जो कुछ भी हम कर लेते हैं, जो देख लेते हैं ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे हम अपना किया हुआ कह सकें। जहां कुछ है ही नहीं जिसे हम करते हों। जो कुछ भी करते हैं गुरु महाराज। उन्हीं की कृपा है, उन्हीं की दया है। हे प्रेमी! ऐसी वास्तविकता हमें पढ़ने को सुनने को मिलती पर इसका गहन अर्थ क्या है।

जब भी यह कहा जाता कि गुरू कर्ता गुरू करने योग गुरू परमेश्वर है भी होग या कर्ता करे न कर सके गुरू किये सो होए इत्यादि-इत्यादि जितने भी वचन गुरू महिमा के हम पढ़ते हैं, सुनते हैं उन वचनों में से भी जब गुरू महाराज को कर्ता स्वरूप कहते हैं तो उसका अर्थ ऐसे सीधा-सीधा नहीं। उसका अर्थ भीतरी है। क्या ?

हे प्रेमी! जिसने भी गुरू महाराज को कर्ता कहा, जिसने भी गुरू महाराज को करन करावन हार स्वामी करके कहा उसका आश्य ऐसे नहीं कि गुरू महाराज ने एक हाथ से किया और वापिस आ गये। उसका आश्य क्या है कि वो सृष्टि के प्रत्येक कण को, सृष्टि की प्रत्येक परिस्थिति को प्रत्येक भाव को सबसे पहले गुरू महाराज में वीलीन करके देखता है। पहली चीज़ है क्योंकि जब तक कोई भी दुनियावी स्थिति चाहे सुख हो, दुख हो। जब तक वो तुम्हें हिला सकते हैं तब तक यह समझना कि तुम्हें प्रत्येक स्थिति में गुरू महाराज का अनुभव नहीं। सुख आया शादी आयी खूब नाचे ढोल, ताल, मंजीर, नगाड़े, हारमोनियम, बाजे, डी०जे कई कुछ बजा। घर के नाचे, बाहर के नाचे सब नाचने लग पड़े किस लिए नाचे कि खुशी है सिर्फ इसलिए। उनको बहुत प्रसन्नता है कि उनको शादी पर बुलाया गया, जन्मदिन पर बुलाया गया वो नाचते हैं। दुख आ गया तुमने संदेश दिया कि भई फलां आदमी मर गया, वो आकर दुखी होंगे। कोई छाती पीटेगा, कोई टांगे पीटेगा, कोई रोएगा, कोई चिल्लाएगा।

हे प्रेमी! दुख था तो दुखी हो गये। सुख आया तो सुखी हो गये। जिधर की हवा आई उधऱ को हो गये। जब तुम परिस्थिति के साथ बदल सकते हो, तुम्हारा अपना आपा ढल सकता है। इसका अर्थ कि तुम्हें गुरू महाराज की समझ नहीं आई। गुरू शब्द का अर्थ होता भारी। भारी बहुत भारी जो नीचे को ही खिंचता ही चला जाए और नीचे को जितना कोई उठना चाहे उतना और नीचे को खींचता चला जाए, उसे कहा जाता गुरू । यह

गुरू शब्द से ही बना था गरूर जिसका अर्थ गुरू शब्द के अर्थ से शत्त प्रतिशत उल्ट है। गुरू शब्द से ही बना था गुरूत्वाकर्षण। गुरू का अर्थ होता है नीचे को खिंच सकने वाला। हे प्रेमी! महांपुरूषों ने गुरू महाराज को अति विशाल ब्रह्मांड से भी बड़ा करके कहा। उनका कहने का अर्थ दरअसल यह था कि गुरू महाराज वो हस्ती शक्ति हैं। इतने बड़े हैं, इतने भारी हैं कि हम उनका वर्णन नहीं कर सकते। हम जितना कहेंगे उतना कम।

परन्तु जिस-जिस ने भी गुरू महिमा गाई। उनके वचनों में जब आता कि गुरू महाराज करन करावण हार हैं गुरू महाराज कर्ता हैं वहां पर जो समझाया गया वो यह है कि जिसे भी यह अनुभव हुआ उसने गुरू महाराज को समग्र करके देखा। उसने गुरू महाराज को प्रत्येक स्थिति में देखा। सुख आ गया तो भी हिले नहीं, दुख आ गया तो भी हिले नहीं शांत। यह शांति कैसी है।

एक कोई भक्त किसी समय के पूर्ण महापुरूष का भक्त रहा होगा। अब जिस आदमी ने यह कथा लिखी उसने तो नाम दिया था गुरू नानक साहिब। गुरू नानक साहिब ही थे या कोई और था मैं इस तर्क में नहीं जाना चाहता। मैं तत्व की बात लेता हूं। जो भी महांपुरूष रहे होंगे उनका भक्त उस समय के पूर्ण महांपुरूष से ही प्रश्न करता है। कि गुरू महाराज यह जीवन-मौत, जन्म-मरण क्या है ? तो गुरू महाराज ने समय के अनुसार समझाया कि जन्म यह है, मरण यह है। तो पूछते-पूछते उसका कुछ प्रश्न ऐसा हो गया कि जीवन में हमें दुख भी आते हैं सुख भी आते हैं। अचल अवस्था कैसे हो, कैसे टिके रहें ? एक दो बातें और पूछ ली। कि भक्ति क्या है ? क्योंकि पूछते समय ज्यादातर होता क्या है कि **जब तुम्हारे अन्दर प्रश्नों का पिटारा खुल जाये तो कई बार तुम जवाब कम लेते हो प्रश्न पर प्रश्न चलते हैं।** जैसे बच्चे करते हैं कहीं बच्चे जायें अपने पिता के साथ मां के साथ रास्ते पर देखा हाथी जा रहा कहेंगे कि यह क्या है। मां अभी समझाने को है। पिता अभी समझाना चाहता है कि यह हाथी है। वो सुनता नहीं। उधर गधा देख लिया कहेगा यह क्या है ? अभी पूछा ही था खिलौने देख लिए अच्छा यह भी यह क्या है। क्योंकि वहां जानना कुछ नहीं चाहता बस प्रश्न पर प्रश्न हैं। इसे कहा जाता बाल बुद्धि। उसे सिर्फ प्रश्न करने का पता। सिर्फ उसके अन्दर प्रश्न हैं, जिज्ञासा नहीं।

जिज्ञासा का अर्थ होता जो पूछा है यह समझ में आ जाए। पूरी तरह अन्दर घुस जाये। पर जो प्रश्न बुद्धि है—बस पूछे जाओ। समझ आये न आये क्या लेना। शिष्य भी बेचारा ऐसा ही रहा होगा पूछे जा रहा कई कुछ इकट्ठा ही पूछ लिया तो गुरू महाराज कहते तेरे प्रश्नों के जवाब बाद में देंगे तूं अभी जा फलां गांव में चला जा जो वहां पर एक इस नाम का प्रेमी है भक्त है। उसके पास रहना जैसे वो कहे उसकी आज्ञा को मानना। उसके वचन में रहना। बस सारे प्रश्नों के जवाब सम्भवत: मिल जाये। वो चला गया, चला गया जाकर अब कच्चे घर थे द्वार खटखटाया, अन्दर से बेचारा वो भक्त आदमी निकला। भक्त आदमी निकला तो निकलने से पहले कुछ आवाज़े सुनीं झगड़े की। जैसे आपस में कोई लड़ाई झगड़ा हो। जब उसने दरवाजा खोला उसकी हालत देखी वो तो एक साधारण देसी किसान बिल्कुल जैसे सादापन। कोई लगाने पहनने का शौक नहीं बस ऐसे आम आदमी। अब जैसे ही इस नये आदमी ने उस घर के मालिक को देखा कहता गुरू महाराज ने मुझे इसके पास भेजा और यह ऐसे देसी। इसने तो कहते कपड़े भी पूरे नहीं पहने। हे

प्रेमी! ध्यान रखना भक्ति में Parameter नहीं चलते। सबके अपने-अपने मीटर हैं गुरू महाराज कुछ कहते हम अपना ही मीटर लगा देते बीच में। वो पूरा नहीं बैठता। उसने अपना मीटर लगा दिया कि हैं! गुरू महाराज हमें इसके पास भेज रहे औऱ यह आगे ऐसा। अब चला तो गया अन्दर क्योंकि गुरू महाराज की आज्ञा थी कि जैसे वो कहेगा वैसे मानना। इधर तो मन में यह बात उधर से उसकी पत्नी आई और उसके ऊपर बरस पड़ी तुझे यह नहीं पता चलता, तुझे। वो चुप, शांत बैठा। बस जब बोला नहीं तो पत्नी ने डंडा उठाया दो चार लगा भी दिये। यह फिर चुप इसने कुछ नहीं कहा। वो गालियां बके जा रही। यह शान्त। बड़ी हैरानी हुई। अब गुरू महाराज का वचन था सो चुप रहा। फिर अब पूछता है कि बताओ गुरू महाराज ने कहा था कि आप से पूछ लेना मेरे योग्य कुछ सेवा हो। वो भक्त कहता हां है जंगल में जा लकड़ियां काट, काट कर लाके मियानी पर रख दे। वो भी किया, फिर जब वो काम खत्म हो गया कहता जी अब। अब कहते एक सफेद कपड़ा ले अच्छी तरह धोकर तह लगाकर वो भी इसमें सम्भाल कर रख ले। वो भी रख दिया। फिर ऐसे दो तीन दिन तक औऱ कारोबार जो चलना था चलता रहा एक दिन उसे खेतों में ले गया चल कहता हल जोड़ना है।

अभी इधर काम चल ही रहा था पीछे से खबर आ गयी कि आपका पुत्र चल बसा। जैसे ही उसने सुना कहता पुत्र चल बस यह उस मालिक का तो वो मालिक कहता अच्छा। गुरू महाराज की बड़ी दया है। चल घर अब। हल बैल उठाये घर आ गये। सामान रखा सामान रखते ही पिता रूप बन गया। पिता भी कैसा अच्छा बहुत बुरा हुआ जो प्रभु की इच्छा। आंखों में कोई आंसु नहीं कोई दुख नहीं बस ठीक है कहता प्रभु की मौज थी। अब पत्नी चिल्लाए। कहती यह कैसा बाप इसे रत्ती भर भी दुख नहीं। इसका 16-17 वर्ष का जवान बेटा मरा और यह कहता प्रभु कृपा। सिर खाये इसका प्रभु और उसकी कृपा मैं तो बर्बाद हो गयी। अब पत्नी है वो अपनी जगह उसका दुख ठीक पर दूसरी तरफ और ही बात कुछ इधर से रोन-धोना पड़ा उतने में बारिश भी शुरू हो गयी और माहौल बदल गया। अब लोग कहते संस्कार की तैयारी करनी तो भक्त कहता लकड़ियां रखी हैं ऊपर लकड़ियों के साथ सफेद कपड़ा भी रखा है। इंतजाम तो पहले से ही वो सारा कुछ उठाया संस्कार हो गया।

इस आदमी को (जो नया भक्त आया था) इसे खलबल मच गई कि कुछ हो मुझे पहले मेरे प्रश्न का जवाब चाहिए। उसके आगे पीछे घूमे कहता एक बात है वो कहता भई अभी नहीं बाद में। कहता बस एक बात बता दो कहता भई रूक सब्र रख। करते-करते कुछ दिन निकले तो आया हुआ भक्त कहता जी अब रूका नहीं जा रहा। बस अब आप बता दो। **कहते पूछ, कहता एक तरफ तो पत्नी का व्यवहार उससे मुझे बड़े प्रश्न हैं। दूसरी तरफ आपने लकड़ियां पहले ही तैयार करवा लीं, कफन भी तैयार करवा लिया। यह क्या है ?** कृपा मुझे इस प्रश्न से निकालो मेरे अन्दर बड़ी आग लगी। तो वो जो भक्त था उसने समझाया कहता जो पत्नी करती वो उसके लेन-देन, जो मैं करता हूं सो मेरे लेन-देन। जो बच्चे के साथ हुआ सो उसके लेन-देन। यहां किसी का कोई जवाब नहीं। कहता जी फिर लकड़ियां पहले ही क्यों तैयार करवाईं ? कहता यह गुरू महाराज की कृपा है। यह कृपा है जिस दिन गुरू महाराज ने ज्ञान करवाया था उस दिन कहता मैंने एक प्रश्न किया था कि हे गुरू

महाराज! मैं अंधा हूं मैं तो आंख होते हुए भी अंधा हूं मुझे रास्ता दिखाओ मैं क्या करूं। तो गुरू महाराज जी ने जवाब दिया कहते कि निश्चिन्त रह जो तुझे समझाया है इस पर डट जाना बिल्कुल ऐसे डट जाना कि इसके बिना जीवित न रहे कहता जी ठीक। वर्षों वर्ष निकल चुके थे। कथा कार लिखता है कि 12 वर्ष निकल गये थे।

अब 12 वर्ष का अर्थ है जिसने 12 वर्षों तक गुरू महाराज के दर्शन नहीं किये थे। वो बेचारा जीता तो है पर किस बात पर टिक कर कि आज्ञा यह थी कि भजन कर कमाकर खा। भजन का, नियम का, गुरू आज्ञा का पक्का। जब यह दृश्य देखा तो कहता गुरू आज्ञा थी भजन कर। भजन कर रहे अब भजन करते हैं तो गुरू महाराज जी ने यह दृश्य दिखा दिये थे यह भी दिखाया था कि पत्नी के साथ कलेश क्यों क्योंकि कहता यह किसी जन्म का मेरा और इसका संबंध है मेरा जीवन कौए का था। यह गधी थी कुम्हार की वो गधी जिसकी पीठ पर वज़न डाल-डाल कर जख्म हो रखे हों उससे फिर कुम्हार काम नहीं लेता छोड़ देता ऐसे ही। **यह कहता वो गधी है मैंने कौए के रूप में इसका मांस खा रखा, नोंच-नोंच कर खाया है। अब नोंच-नोंच कर देनदारी भी है।** दिये जा रहे वो तो देनी ही पड़ेगी कोई सवाल ही नहीं। पहले कहता दुख होता था कि हाय! हे परमात्मा तूने कैसी पत्नी दी। हे परमात्मा तूने क्या दे दिया। मेरे जीवन में क्लेश ही क्लेश पर कहता जिस दिन बोध हुआ उस दिन फिर हो गया कि अच्छा जो है ही देनदारी उसको क्या रोकें। तो कहता जी यह जो लकड़ियां थी, यह। कहता यह गुरू महाराज की कृपा है क्योंकि जिस दिन गुरू महाराज ने ज्ञान करवाया था तब एक वचन कहा था कि किसी पर भरोसा मत रखना यह सब संगी कभी छोड़ जाते हैं। तो कहता तब **मुझे गुरू महाराज जी के वचनों में खटास नज़र आई। यह कैसे गुरू। आज ज्ञान करा दिया और आज ही कह दिया कि सब छोड़ देते। यह तो पहले ही तोड़ने वाली बात कर दी *हे प्रेमी तुम गुरू भी वैसा ही ढूँढ़ते हो जो तुम्हें संसार की पूरी खुल खेद दे तुम्हें माया में लिपटाकर तुम्हारा डटकर बेड़ा गर्क करे*** तो खैर उस ने सोचना कहता अब आज्ञा है अपने आपे से क्षमा मांग कर कहता भजन किया तो यह भी दृश्य नज़र आ गया कि यह टिकेगा नहीं। टिकेगा नहीं तो ठीक है अब जिसने जाना उसकी तैयारी करें। बस कहता यह वो है। अब जितने इसके प्रश्न थे ऐसे क्यों? वैसे क्यों? यह वो सारे प्रश्न तो हो गये ठंडे।

अब नया प्रश्न यह जाग गया कि यह स्थिति कैसे आए। फिर लगा उसको पूछने अच्छा फिर मुझे भी बता दे। मेरे अन्दर यह शक्ति कैसे आए कि मैं भी देख सकूं। तो उस प्रेमी ने जबाव दिया कहता यह शक्ति तब आएगी जिस दिन तूं चित्त से इस शक्ति का गुलाम नहीं रहेगा। जिस दिन अन्दर से छोड़ देगा कि बस देखना ही नहीं जो हो जाए, हो जाए। **हे प्रेमी! भजन करते तो हैं पर वासना रखके कोई कहता भजन इसलिए करना कारोबार चले, कोई कहता इसलिए करना बच्चे हो जाएं, कोई कहता बच्चे विदेश चले जाएं,** बच्चे पढ़ जाएं, बच्चों की शरारतें टल जाएं, बच्चे यह हो जाएं। माता पिता तंग करते उनका ऐसा हो जाए, घर छोड़ जाएं। **हे प्रेमी! हर आदमी भजन किसी-के-लिए करता।** भजन—भजन के लिए नहीं करता। भजन किसी चीज़ के लिए करता और जब तक भजन—भजन के लिए न हो तब तक जीवन में प्रेम नहीं जागता। भजन तो भजन के लिए

होगा। अब हंसी की बात है पर बता ही देता हूं, मैं किसी को समझा रहा था शराब की बात थी। पत्नी ने भी कहा कि यह ऐसा करते हैं बताया उस बेचारे ने पहले भी था। तो मैंने उसे कहा मैंने कहा देख तूने यदि पीनी है तो भोग लगा कर पीया कर कहने का अर्थ तो यह था कि वो शर्म के मारे इस पशु पने को त्यागे पर वो आगे से कहता हां जी वो मस्तों को भोग लगाते हैं। हे प्रेमी! अब कहां बुद्धि घास खाने गई। यह भी बहादुरी समझते हैं कि भोग लगा कर पी ली। **नहीं समझता कि कर्म तो कर्म है। हे प्रेमी! कर्म तो कर्म है।** ***वहां आज बोते जाओ क्योंकि जब हम कुछ बोते हैं, बीज बहुत छोटे होते हैं, बहुत छोटे। यह हमें अनुभव नहीं होता कि यह क्या बनेगा लेकिन जब वो पेड़ बन गया, उस एक पेड़ को काटने के लिए हे प्रेमी! 3-3 दिन भी लग जाते। यह हमें बोते समय ख्याल नहीं आता।*** हम एक हाथ पर कितने बीज रख लेते हैं पर यह भूल जाते हैं कि यह इतने पेड़ हैं। काटेगा कौन? यथार्थ में यह स्थिति जीवन की है। किये जाओ कोई फर्क नहीं पड़ता पर काटना तुम्हें है। तुम्हारा किया तुमने काटना।

अपना किया आप ही पावे, प्रारब्ध फिर नाम धरावे।

गुरूवाणी का वचन है कहते कि अपना किया खुद ही काटते हैं। करते भी तुम हो, काटते भी तुम हो। सिर्फ फर्क यह है कि काटने की बारी आई पसीना आ गया अन्दर गये कपड़े बदल कर आ गये। फिर काटने लगे हैं। कपड़े बदलने का मतलब है 'शरीर' बूढ़े हो गये, शरीर छूटा नया लेकर काटे जा रहे हैं। अब हे प्रेमी! जो बो रखा वो तो काटना ही है और यहां सवाल सन्यासी गृहस्थी का नहीं। सारे ही काटते हैं। जो कर्म की देनदारी मेरी सो मैंने ही देनी। जो तुम्हारी सो तुमने देनी। फिर यदि कहो कि करने का फल इतना ही है। कर्म का फल इतना तेज है, तो संगत का क्या लाभ? वो भी सुन लेना।

जो छेवें गुरू थे गुरू हरगोबिन्द जी उनके समय में एक राजा हुआ था सुकेत मंडी का। उस राजा ने कभी हरि चर्चा सुनते-सुनते मन में प्रश्न वैसे पूछ लिया। गुरू महाराज इस बात पर प्रवचन कर रहे थे कि भई तुम्हें अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। **उसने चलते सत्संग में मन ही मन यह अपने आप को पूछा यदि सत्संग करके भी कर्मों का फल भुगतना ही है तो संगत का क्या लाभ? तो गुरू महाराज के पास आकर क्या करना? तो कर्म भुगतो।** अब हे प्रेमी! गुरू महाराज तो गुरू महाराज। जवाब नहीं दिया। जब विश्राम का समय आया बस कहते सब सो जाओ। जब सो गये रात को उस राजा ने स्वपन देखा। स्वपन में भी जो पूछा था उसका एक स्वरूप देखा चित्त यह कहता है कि यह कर्म भुगतने हैं तो संगत का क्या लाभ? स्वपन में उसका प्रश्न ही यह रूप लेकर आता है कि यह राजा एक चाण्डाल के घर पैदा होकर बूढ़ा हो चुका। इसके आगे और सन्तान उसकी सन्तानें ऐसी तीसरी चौथी पीढ़ी सी बैठी है, बहुत लम्बा परिवार। सब कुछ है और भी क्या-क्या परिस्थितियां राजा ने देखी होंगी कि ऐसे-ऐसे मैं मर गया, मेरे आगे यह हो गया। ऐसा बेढंगा सा स्वपन देखा। सुबह उठकर जब दृश्य देखा सारे तैयार हो रहे, गुरू महाराज भी। अब गुरू महाराज जी ने तो लीला करी कि कहते चलो भई शिकार खेलना। चलो कहते आज सारे शिकार पर निकलते हैं, शिकार खेलने जाना। राजा और गुरू महाराज तो बराबर घोड़े चलाते रहे। बाकी सैनिक इत्यादि सब छूट गये पीछे। ये चलते-चलते काफी आगे निकल गये।

अब शर्त गुरू महाराज ने यह रखी थी कि जिसके आगे से शिकार निकलेगा शिकार उसी ने करना। तो जब थोड़ा सा आगे गये गुरू महाराज ने अपने घोड़े को धीमा कर दिया और रूक गये। राजा का घोड़ा तेज था उसके आगे से हिरण निकल गया। हिरण इसके आगे से निकल गया, गुरू महाराज कहते चल तूने शिकार करना। बस वो शिकार के पीछे भागते-भागते पता नहीं कहां निकल गया। सैनिक बगैरह सब छूट गये पीछे। गुरू महाराज हैं, राजा है। जब घने जंगल में निकल गये तो आगे गुरू महाराज भी कहीं को ओझल हो गये। अब राजा रह गया अकेला। अकेला राजा, संध्या का समय, सारे दिन का भूखा, तब दृश्य क्या देखता है कि सामने कोई जैसे धुंआ सा निकल रहा जैसे बस्ती सी हो। वहां गया जब वहां जाकर देखा तो चाण्डाल से सामने आ गये।

Welcome करते हैं, स्वागत करते हैं कि आओ जी आओ। कोई दादा कहे, कोई पिता कहे। थे सारे वही जो स्वपन में देखे थे, बिल्कुल वही लोग। वो कहे भी कहता भई मैं कोई तुम्हारा रिश्तेदार नहीं, मेरा तुम्हारा कोई लेन-देन नहीं। मैं तो राजा हूं। कहते नहीं-नहीं तुम हमारे पिता हो, तुम हमारे दादा हो, पड़दादा हो। वो बड़ा दुखी कहता मेरा तुम्हारा कोई संबंध नहीं, बस बख्शो जाने दो। कहते नहीं तुम इतनी देर बाद आए तुम्हें कैसे जानें दे। वो और प्यार करें और खींचे कोई कंधे से, कोई घोड़े से। **जब बड़ा दुखी हो गया तो अन्दर से प्रणाम हुई कि हे गुरू महाराज! रक्षा करो।** कहां फंस गया? वो कहता जी सब छोड़े शिकार, पाप, सब कुछ छोड़ा बस आप आज बचा लो। हे प्रेमी! भक्ति जागती भी तब है जब कांटा चुभे। अब राजा की भी भक्ति जागी तो गुरू महाराज आए। गुरू महाराज आए जब आकर देखा चंडालों की बस्ती कहते राजन तूं यहां किधर। कहता जी बस इन्होंने पकड़ा है। वो कहते चल-चल। उन्होंने कहा कि नहीं-नहीं यह हमारे पिता हैं, हम नहीं जाने देंगे। गुरू महाराज कहते नहीं यह कहता तुम्हारा अपना नहीं। यह राजा है। तुम्हारे अपने का हमशक्ल है। तुमने अपने पिता को, दादा को जहां गाढ़ दिया था वहां देखो वो वहीं है। तो उन्होंने वैसे वो मिट्टी इत्यादि जो खुदाई करी, पिंजर देखा नीचे पड़ा है, जब अस्थि पिंजर देखा तो उन्होंने जान छोड़ी राजा की। राजा आ गया कहता गुरू महाराज यह तो वही थे जो मैंने स्वप्न में देखे थे। ***गुरू महाराज कहते तेरा प्रश्न था कि यदि कर्मों का फल भुगतना है तो संगत का क्या लाभ? यह संगत का लाभ है।*** कहता जी समझा नहीं तो समझाया कि जो चांडाल परिवार तूने देखा, तूने यहां पैदा होना था। पैदा होकर सौ वर्ष तक कम से कम आयु इनके बीच में भोगनी थी, दुख उठाने थे। यह तेरा सिर्फ एक स्वपन से कट गया क्योंकि तूं गुरू महाराज के दर्शनों का प्रवचनों का लाभ लेकर सोया था, कहते यह लाभ है।

तो हे प्रेमी! यह मत समझ लेना संगत का लाभ नहीं। लाभ तो है पर लाभ लेने वाले पर है। तुम कहो कि शराब तो जी भोग लगाकर पी लेनी। सवाल है पीनी ही क्यों? भोग तो चलो लगाओ न लगाओ। जो चीज़ तुझे वैसे ही पशु बना दे, उस से तो वैसे ही बच। पर यह तो मोटा पदार्थ है, बच जाओगे। कर्म बहुत बारीकी है। कर्म बहुत बारीकी चीज़ है यह करते समय हमें पता नहीं चलता और यह कभी मत सोच लेना कि धार्मिक कर्मों से मुक्ति है क्योंकि धार्मिक कर्म असल में है भी कुछ नहीं। तुम कहोगे धर्म-कर्म है— हवन, पूजा, पाठ। हे

प्रेमी! हवन करते समय एक जीव की आहूती गलत हो गई। जीव हत्या हो गयी, पाप तो तेरा तभी हो गया इसलिए संत कबीर ने कहा था कि **कोई भी धर्म ऐसा नहीं जो सौ प्रतिशत, शत-प्रतिशत पवित्र हो। हर कर्म में कुछ न कुछ बाधा है। जहां बाधा न हो वो एक ही चीज़ है परमात्मा का नाम क्योंकि उसमें लगाना कुछ नहीं। बाकी सब में कुछ न कुछ लगाना है। कहीं पर शब्द लगाने, कहीं पर कान लगाने, कहीं आंखे लगानी,** कहीं हाथ लगाने हाथ न धोए गलती से बैठ गया, पाप हो गया। जूठन हो गयी कुछ मंत्र बोला थूक पड़ गया। हे प्रेमी! यहां पुण्य तो पता नहीं हो न हो। पाप वैसे ही हो जाता मुफ्त में। जबरदस्ती तुम न चाहो तब भी पाप हो जाता। अब सोचो कि उस कर्म से मुक्ति। हे प्रेमी! जिस कर्म में पहले ही बन्धन है, उससे मुक्ति क्या होगी।

मुक्ति एक और मात्र एक परमात्मा के भजन से है। यदि कहो कि मुक्ति क्यों है उससे। तो **हे प्रेमी! वो परामत्मा का भजन कोई कर्म नहीं। इसलिए वहां मुक्ति है। परमात्मा का भजन बोध है, होश है बस और कुछ नही।** होश को ऐसे समझो कि जैसे एक गर्भवती माता हो कोई, वो माता जिसने अभी बच्चे को जन्म देना वो सोती है, चलती है, उठती है, बैठती है, रास्ते पर चले, खेतों में चले सब कुछ करते हुए चित्त उसका उस गर्भ के शिशु में है। सब कुछ करती है सो भी जाए तब भी चित्त उस बच्चे में है कि उसे कहीं दिक्कत न हो जाए। अब यदि कहो कि उसकी सोते समय रक्षा कौन करता? हे प्रेमी! वो है ध्यान। वो ध्यान तब उसका रक्षक है। नींद उसे आ गई कोई समस्या नहीं पर ज्यों ही कुछ पेट के साथ छू गया तभी उसका ध्यान कहता कि, कुछ हुआ या दूसरी साधारण बात समझना तुम्हारा कहीं हाथ जल जाए, बाजू जल जाए तुम ऐसे नीचे रख कर सो जाओ। तुम चाहे सोए हो, बैठे हो, उठते हो ध्यान बाजू में है। नींद में भी यह पता होता कि बाजू हिलानी नहीं। हे प्रेमी! तब कौन तुम्हें समझाता नींद में— वो ध्यान है। उसी ध्यान ने जब अन्दर जाकर खुल जाना। हे प्रेमी! उस बोध में उतरने का नाम सुमिरण है। सुमिरण का अर्थ कोई रट्टा नहीं। सुमिरण का अर्थ कोई दिखावा नहीं कि लोगों को पता लगे मैंने किया।

हे प्रेमी! सुमिरण वो सम्पत्ति है जितना गुप्त हो, जितना गुप्त हो उतना ही अच्छा क्योंकि यह वो चीज़ है तुझे कहीं कोई करता देख भी ले, तब भी इसमें से कुछ घटता है। तेरे लिए किसी ने यह श्रद्धा भी कर दी कि अच्छा यह तो बड़ा भक्त है। हे प्रेमी! तब भी बेड़ा गरक होगा, तब भी बहुत कुछ चला जाता इसलिए कोशिश करके इस चीज़ से बचा कर। ज्याद से ज्यादा बच। दिखावे का सवाल नहीं कोशिश यह करो कि कोई देखे ही न। किसी को यह सवाल ही न आए कि तूं भजन भक्ति करता भी है। पर इससे नसरूद्दीनों को मौज हो जाएगी वो कहेंगे कि जी हम तो करते ही ऐसे हैं किसी को पता ही नहीं क्योंकि करना ही नहीं क्योंकि उनकी संगत ऐसे है, जैसे पंचतंत्र की कहानी है।

दो चूहे मोटरसाईकिल पर जा रहे थे। पास में से शेर निकला तो एक चूहे ने जो पीछे बैठा था,शेर से कहा,''आ जा ओए! बैठ जा, तो आगे वाला कहता देख ले फिर तेरी मम्मी यह न कहे कि बदमाशों के साथ घूम रहा था। ऐसे कहता बर्बादी हो जाएगी, इज्जत की तो हे प्रेमी! जिन्होंने भजन नहीं करना उनकी संगत भी ऐसे लोगों की है कि जिनकी प्रेरणा ही यही है नहीं कोई बात नहीं फिर कर लेंगे। हम तो पीछे से कर के आए हैं। हमने तो

सुबह कर लिया था। जैसे एक बच्ची है, उसको यदि अभी कहो न बेटा ब्रश किया कहती सुबह किया था। पक्का किया था मैंने। सुबह उठते को कहो ब्रश—कहती मैंने रात को किया था, मम्मा को पूछ लो। बिल्कुल बात वही। यह वो खुण्ड हैं जिन्होंने भजन नहीं करना वो कहेंगे बस अभी किया—अभी किया। रात को ही करके सोए थे तो हे प्रेमी! मैं यह कहता हूं दिखावा न हो पर भजन करना जरूरी है।

एक भी स्वांस बेकार चला गया तो समझ ले पता नहीं कितनी जबरदस्त पूंजी तूने खो दी। इस चीज़ को अनुभव करने के लिए कभी किसी दुखी के स्थान पर बैठ कर देख। जो लोग आज कहते हैं चला नहीं जाता टांगे नहीं चलती, बिल्कुल अपने प्राणों से उनके जैसा अनुभव कर तो तुझे पता चलेगा शरीर की कीमत क्या है। और ऐसे ही जो मरने के लिए तैयार है बस अभी मरा कि मरा उसके स्थान पर बैठ कर सोच कि तेरे प्राण निकलने वाले हों, तब तेरा कौन सहाई है तो हे प्रेमी! एक-एक स्वांस की कीमत नज़र आती कि हे परमात्मा! एक दे-दे, बस। यह ऐसे समझ में नहीं आता ***क्योंकि ऐसे तो सम्पत्ति बहुत है। यह अनन्त नज़र आती क्योंकि असल में पता मर तो जाना शायद कल मर जाए पर लगता कि पता नहीं कितने साल सौ साल अभी जीना।*** बहुत उमर पड़ी है। उस भ्रम के कारण तुम्हें अपना आगे का रास्ता नज़र नहीं आता और नज़र न आने के कारण तुम दायें बायें टिरकते हो कभी इधर को, कभी उधर। नज़र न आने के कारण कभी यह पूज लिया, कभी वो पूज लिया, कभी कोई चेले, कभी मसानी, कभी भूत, कभी प्रेत। अभी नवरात्रे हैं, इन दिनों में तो चेले-ओझों की भी मौज लगी है, क्योंकि ग्राहक ही कई मिल जाते। हे प्रेमी! ध्यान रखना यदि तेरी अंतर आत्मा संतुष्ट नहीं तो तुझे कोई संतुष्ट नहीं कर सकता, जीवन में कोई संतुष्ट नहीं कर सकता। यदि तेरा अपना आपा संतुष्ट नहीं, स्थिर नहीं तो तुझे कोई तेरा ईलाज नहीं कर सकता इस दुनिया में। चाहे कुछ कह ले तेरा दुनिया में तब तक ईलाज संभव नहीं जब तक तूं अपना ईलाज स्वयं न करे और तेरा अपना ईलाज परमात्मा का भजन है क्योंकि हे प्रेमी! जिस-जिस चीज को तुम रोग मानते हो, भ्रम मानते हो या भूत मानते हो वो तुम्हारे अपने दिमाग की उपज है या दिमाग की या कर्मों की। मैं यह नहीं कहता कि भूत नहीं होते, होते हैं पर पकड़ते किसको हैं, जिसका जीवन भूतों वाला हो, भूतिया हो। अब भूतिया को भूत न पकड़े तो कौन पकड़े? जिसका जीवन सादगी में हो, पवित्रता में हो, समता में हो उसे भूतो-प्रेतों का सवाल नहीं।

भूत उसको पकड़ें जिसने रहना ही भूत योनी में, हर समय भूत योनी में। गलत खान-पान, गलत आचरण, गलत कर्म यह तीनों चीज़े भूतों का निमंत्रण है। लोग कह लेते हैं कि किसी ने हमारे ऊपर लगा दिया। किसी ने चीज लगा दी, किसी ने ओपरे की कसर लगा दी, यह लगा दिया। हे प्रेमी! इसकी Science क्या है। इसकी साईंस यह है यह सिर्फ energy का खेल है। Negative energy और positive energy। यह दो तरह की ऊर्जा है ऋन और धन। एक तरफ Postivity पवित्रता है। दूसरी तरफ Negativity है। भजन का अर्थ क्या है कि भजन ने तुझे उस समता में ले जाना जहां पर यह दोनों आकर Neutral हो जाएं। न Negative में Negativity रहे न Positive में Postivity, दोनों ही खत्म। इसीलिए भजन करने वाले को न देवता का प्रकोप, न राक्षस का प्रकोप।

जिसने करना ही नहीं, उसे हे प्रेमी! दोनो का ही प्रकोप। उसकी तो वो हालत है एक हाथ इधर किसी Tractor से बांध दिया दूसरा उधर। इधर को जोर लगाए इधर हो जाए, उधर को लगाए उधर को हो जाए। **स्थिरता है ही नहीं क्योंकि यदि आज तुझे किसी भूत ने पकड़ा तूं इलाज सोचेगा किसी देवता से। कभी किसी और ऋद्धि सिद्धी से, कोई औऱ पीरों की जगह कई कुछ करेगा।** जब उधर को जाएगा वो चीज़ उधर को खींचेगी। जो लगा रखा यह फिर उधर को खींचेगा।

हे प्रेमी! फिर सारा जीवन डावांडोल है और यदि भजन की बात करूं तो भजन में स्थिरता है पर है उसके लिए जिसने एक कुछ नियम कुछ साधन बना रखा। जिसके जीवन में स्थिरता ही नहीं कुछ नेम ही नहीं। हे प्रेमी! उसको तो फिर उपदेश ऐसे है कि दवाई दे दी खिड़की में रख दी बस, खाई नहीं। अब जिसने खाई नहीं उसे फर्क क्या पड़े। उपदेश लेने से काम नहीं बनता। **बहुत से सज्जन ऐसे है जो कहते हमने उपदेश लिया हमें तब उपदेश हुआ ऐसे हुआ। ध्यान रखना उपदेश लेना न लेना बड़ी बात नहीं। भजन करना बड़ी बात है।** भजन करने का अपना एक अलग मार्ग है, भजन करने का अपना एक रस है। उपदेश लेने से रस नहीं आ गया। उपदेश लेना एक मोहर के समान है, ठप्पा लग गया, बस। इससे ज्यादा नहीं बात तब है जो भजन करे, मन मार कर भजन करे क्योंकि जब भजन का सवाल आता तो उस समय मन खलबल करता, उस समय मन यह कहता है कि नहीं आज नहीं होगा मेरे से नहीं होगा अभी तो कर लिया अभी बहुत कर लिया 15 मिनट बहुत बैठ तो लिए। उनका भजन भी ऐसे है जैसे किसी को कहा जाए काम लगे हुए मजदूर को कि आओ भई सारे आ जाओ 5 मिनट दबाकर Rest कर लो। अब पांच मिनट में कितनी दबा कर Rest होगी। हे प्रेमी! ऐसे ही उनका भजन है।

15 मिनट में बहुत बैठ लिए। हे प्रेमी! 15 मिनट में तो तेरी शारीरिक स्थिरता नहीं बन पाती और यदि आज तुम कहो कि दर्दें हैं, यह है, वो है यह सब बाते हैं। बातें मैं इसलिए कहता हूं तुम शरीर को आज पक्का करना शुरू करो तो हे प्रेमी! शरीर पकता है पर आज अभ्यास न करो तो शरीर कैसे पके। आज अभ्यास करोगे, अभी करोगे तो

दुशहरा के सुअवसर पर हुए प्रवचन जो तत्क्षण नोट कर लिए गए

एक वृतान्त रामायण में आता जिसके अनुसार जब रावाण का अत्याचार बहुत बढ़ गया तो उस समय ऋषि-मुनि, संत-सन्यासी तकरीबन तकरीबन सारे दुखी हो गये। दुखी इसलिए हो गये क्योंकि साधारण आदमी यदि कोई गल्ती करे पाप करे तो उसका Level भी छोटा ही होता।

अब रावण साधारण नहीं व्यक्ति। रावण महां पंडित, महां विद्वान इतना जबरदस्त विद्वान कि कर्म काण्ड का भी पूरा ज्ञाता जानकार नीति शास्त्र का भी पूरा ज्ञाता, तन्त्र शास्त्र का भी पूरा ज्ञाता, वेद विद्या का भी पूरा अर्थात कोई मार्ग ऐसा नहीं जिसको रावण जानता नहीं। यह जो आज तक उसके पुतले जलाये जा रहे आगे भी जलाये जाएंगे इसका सही कारण क्या है? हे प्रेमी! इसका असल कारण है अपने भीतर की स्थिती को या अपने भीतर की भढ़ास को निकालना और कुछ नहीं। इससे ज्यादा

शरीर पकना शुरू होगा और पकने का अर्थ यह होता है अभ्यास जिस समय किया जाए मन मारकर किया जाए, दृढ़ता पूर्वक किया जाए। अभ्यास के समय अभ्यास है, कर्म के समय कर्म है। जब कर्म किया जाए तो आंखे खोल कर किया जाए, किसी भी कर्म को करते समय चित्त में निर्णय ले कि यह कर्म कहीं डूबोयेगा तो नहीं।

हे प्रेमी! कहने को तो भजन कर लिया, भजन पर बैठ गये पर ज्यों ही उठे त्यों ही बातें। आज सुबह की बात जितने सज्जन यहां रात को थे जैसे उठे वैसे बड़ा शोर शराबा शुरू तो मैं यह देख रहा था कि बैठ कर किया क्या। जो तुम्हें उठते ही कई मसले मिल गये। क्या किया बैठ कर? यदि आधा घंटा तुम शांत हुए तो क्या शांत हुए और भजन तो चित्त का सौदा है। यदि कुछ जपों से भजन हो जाता तो सस्ता था। फिर तो उठते-बैठते जाप करो काम हो गया बस। हे प्रेमी! जाप तो है ही नहीं। भजन अपने चित्त को ध्यानस्थ करना है, चित्त को स्थिर करना है इसीलिए परमात्मा के भजन को सर्वोपरि कहा गया, सबसे ऊपर। नवरात्रों के 9 दिन आए देवी को पूज लिया, दशहरा आया राम जी को पूज लिया, दिवाली आई राम जी को पूज लिया, जन्माष्टमी आयी कृष्ण जी को पूज लिया, गुरू पर्व आए गुरूओं को पूज लिया। यह तो हे प्रेमी! बरसाती भक्ती है, जिसका दिन आया उसको पूज लिया। भक्ति वो है जो दिन बार न देखे। जो बहुत निपट जंगल में रहने वाले लोग हैं, जंगली हैं। जिनका सभ्यता से कोई लेना-देना नहीं। वो भी तो जीवित हैं वो किसको पूजें, तूने कई कुछ पूजा। **एक नवजात बच्चा जो आज पैदा हुआ वो किसको पूजे? हे प्रेमी! वो करता परमात्मा का भजन, जब तक मां के गर्भ में था तब तक भजन था। ज्यों ही बाहर आया त्यों ही थोड़ा-थोड़ा घटते-घटते टूटने लगा।** ***इसलिए हमेशा ध्यान रखना, उस चीज़ को पकड़ जो सम्पत्ति तूं मां के गर्भ से लाया। वो नाम पकड़ने का है और जितना भी हम यहां पकड़े बैठे हैं या पकड़ते हैं, हे प्रेमी! यह सारी चीज़े टिकने वाली नहीं।*** जितना कुछ भी हम यहां देखते हैं, सुनते हैं इन सब चीज़ों की महिमा है पर स्थिरता नहीं। स्थिरता एक मात्र परमात्मा के भजन में है औऱ किसी चीज़ में स्थिरता नहीं। इसलिए प्रयास यही करना जैसा भी

वैसे भी कभी देखो यह समाज में पुतला फूंक प्रर्दशन करते हैं किसी मंत्री का, डी०सी का परन्तु कब होता यह? यदि उसने कोई निर्णय आपके खिलाफ ले लिया। तब उसका पुतला फूंका जाता कि उन्होंने यह बात की, यह बयान गलत दिया। ऐसे क्यों?

तकरीबन पुतला फूंकने का अर्थ है कि हम उसको तो कुछ कह नहीं सकते उसके पुतले के रूप में अपनी भढ़ास निकालो। ऐसे ही रावण के, कुम्भकर्ण के जो पुतले जलाये जाते सिर्फ और सिर्फ भड़ास है। वो भड़ास अब सही मायने में भड़ास भी नहीं रह गई वो Mix हो गई, Mix हो गई खुशी और छुट्टी के साथ कि सरकारी छुट्टी है।

चलो एक दिन आराम करेंगे, खुशी है कुछ खाए-पीएंगे नई Film आ गई वो देखने जायेंगे उसमें रावण का तो कोई काम ही नहीं। अभी के रावण जो पुतले बनते हैं देखो उसमें रावण मोटर साईकिल पर बैठा, रावण को मूंछे लगायी हुई। वो रावण, रावण ही न रह गया तो फूंकोगे किसको। वो दलिया हो गया अब इसलिए अब दशहरा भी

शेष पृष्ठ 20 पर देखें....

हो, जिधर भी हो, जब भी समय मिले अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन में दे। ज्यादा से ज्यादा और पूजने को चित कहीं किसी तरफ को कितना भी जाए एक मूल बात को हमेशा याद रख।

जब तूं मां के गर्भ से निकला था तेरा मूल क्या था। बाहर आते ही तुझे कई कुछ मिल गया, कई कुछ दिखाई पड़ गया देवी, देवता, सिद्ध, पीर हर एक का अपना-अपना स्थान है। हर एक का अपना-अपना समय है। हर एक का अपना-अपना जीवन है। पर हे प्रेमी! यह तो वो है जो छोटी-छोटी कई हस्तियां उस पारब्रह्म ने बना दी। बहुत कुछ बना दिया पर एक वो स्वयं परब्रह्म है जो तेरे अन्दर बैठा। उसको जानना बहुत और बात उसकी बनाई चीजों को पकड़ना बहुत और बात। उसकी बनाई चीजों का फिर अंत नहीं। **कभी तुम ग्रंथों को पढ़ो किसी में एक की महिमा है, दूसरे में दूसरे की, तीसरे में तीसरे की सब में *सब की अलग-अलग महिमा है पर उस महिमा की जो शुरूआत करते हैं, वो भी यही कहते हैं उस आदि परब्रह्म को नमस्कार। अंत में यह कहते हैं उस परमात्मा को नमस्कार बीच में कुछ और है। तो हे प्रेमी! जिसने पहले उस आदि परब्रह्म को नमस्कार करी, तूं भी उस परब्रह्म को समझ ओर-2 कुछ समझने की जरूरत नहीं।***

एक उस परमात्मा को समझ जो तुम सबका, जो मेरा, पूरी सृष्टि का, जीवों-जन्तुओं का आदि है। हम सब का आदि है, कुल लोक लोकान्तरों का आदि है पर उसकी समझ हे प्रेमी! बातों से नहीं आती। उसकी समझ तो आएगी जब तेरा बाहर से कर्म सही हो और भीतर से तेरा नाम सुमिरण का मार्ग सही हो। *अब कुछ ऐसे सज्जन हैं जो कुछ जाप तो कर लेते हैं कोई बेचारे पूजन कर लेते हैं कुछ न कुछ और और कई कुछ पूजे जा रहे हैं। कहता फिर यही है कि बस सिमरण कर लेते हैं। अब हे प्रेमी! रटना बहुत अलग बात सुमिरण बहुत अलग, सुमिरण का अर्थ है याद।* जिस समय गुरू महाराज ने कुछ समझाया, कुछ ज्ञान कराया, कुछ भेद अन्दर पकड़ाया जब चित्त उस में टिका वो है सुमिरण। बजाय उसके जो बाहर कुछ बोलने लग गया वो तो जाप है। जपों से बाहर कुछ होने का नहीं, जपों से ज्यादा क्या होता है वैसे तो जप देते हैं बाहरी सिद्धियां कह लो। किसी काम की ना बनने की स्थिति का ईलाज यह है पर वो भी यदि श्रद्धा से किया जाए। बिना श्रद्धा के ऐसे ही बोले जाओ तो उसका कुछ लाभ नहीं। लाभ है भी तो संसारिक काम बन जाएं इतना है।

जैसे एक कोई व्यक्ति था। उसने अपने जीवन की घटना बताई कि कुछ रोग आ गया, रोग आ गया तो गांव में कोई बुजुर्ग ब्राह्मण थे पण्डित थे। तकरीबन-तकरीबन 90-100 वर्ष की आयु के करीब उन्होंने जब उसकी परिस्थिती देखी, जन्म कुंडली देखी तो उसे बताया कहते कि फलां मंत्र की 40 माला रोज़ फेर। कहता जी कारण क्या है तो बताया कि तेरी कुंडली में यह कर्म दोष है। तो कुछ किया उसने। जैसे भी तो कहता जी मुझे फर्क पड़ा। फर्क तब पड़ा, ठीक हो गया पर उसके जो नियम थे नियम यह थे कि कैसे-कैसे बैठना, कैसे उठना, कहां सोना, क्या खाना बड़े सख्त नियम एक बार गलती हो गयी थी तो सिरे नहीं चढ़ा दूसरी बार किया था। हे प्रेमी! यह तपों का मार्ग है। सिद्धियां, पूजन, पाठ, जप, तप यह सारे मार्ग यह हैं कि और और कई कुछ किया जाता पर सांसारिक काम बनाने के लिए। यदि चाहे अन्तर आत्मा की तृप्ति, मन की शांति वो नहीं इनसे होती। मन की शांति का मात्र

एक साधन परमात्मा का भजन है दूसरी कोई चीज़ उसके बराबर की नहीं क्योंकि परमात्मा का भजन दरअसल क्या है चित्त को सब तरफ से लौटाकर मोड़ कर अपने अन्दर लेकर जाना। यह है परमात्मा का भजन जब चित्त चारों तरफ से मुड़ा। जो-जो चित्त में ख्याल थे अपने-पराये इन सब तरफ से मुड़ कर जब अन्दर लौटा, अन्दर उतरा हे प्रेमी! वो जो स्थिति है वो परमात्मा के भजन की है। वो परमात्मा का भजन है। बातों का नाम परमात्मा का भजन नहीं कुछ गा लेना, रट लेना यह सिमरण नहीं। सुमिरण का सीधा-सीधा अर्थ है याद। जब कुछ भीतर देखा। गुरू वाणीकार ऐसा कहते हैं कि जब गुरू महाराज की कृपा हुई, परमात्मा की कृपा हुई:-

हरि कृपा ते संत भेंटिया नानक मन प्रकाश।

ईश्वर की कृपा हुई तो किसी संत से मिलाप हुआ। जब संत से मिलाप हुआ तो कहते नानक मन प्रकाश। तो जो मन की अज्ञानता के अंधकार की स्थिति थी वो दूर हुई मन प्रकाशित हुआ। अब हे प्रेमी! मन किसका प्रकाशित हुआ जिसने यह अनुभव किया कि कुछ हुआ। जो बेचारा था ही अंधकार में, अंधेरे में उसे आज भी अंधकार है दस वर्षों के बाद भी अंधकार है। उसे क्या सवाल प्रकाश का। उसे इससे कोई लेना देना नहीं यह वो स्थिती है कि जो पैदा ही किसी कूड़े की, छप्पड़ की बस्ती में हुआ उसे खुशबू का कोई सवाल ही नहीं। क्या होती खुशबू वो यदि तुम वहां जाकर कहो कि बड़ी बदबू है वो कहता है कहां बदबू? यह ठीक ही है क्योंकि जो पैदा ही बदबू में हुआ उसके लिए सब कुछ ठीक ही ठीक है। ऐसे ही जब तक तुम पैदा ही अंधकार से हो स्थिति अंधकार की है तब तक प्रकाश के साथ कोई मेल-जोल नहीं। महापुरूष समझाते हैं कि तूं परमात्मा की संतान है, तूं उसका स्वरूप है पर जीव को यह बात समझ में नहीं आती। वो फिर किसी दूसरी तरफ को हो लेता ओर ही दिशा को पलट जाता समझाते गुरू महारज कुछ हैं, जीव समझता कुछ और ही है।

सो हे प्रेमी! ध्यान रखना मैं अन्तिम विनती फिर वही करता हूं चाहे कैसे भी हो एक तो अपनी संगत सुधार, संगत बदल, संग साथ बदल उसका संग कर जो तुझे कुछ उचित बात, कोई ऊंचा चढ़ने की बात दे जाए और खास करके उस संगत से बच जो गिराए ऊंचा चढ़ने वाले की संगत न भी कर वो चलेगा पर गिरने वाले की मत करना। तूं जहां है वहां खड़ा हो जा इतना ही बहुत पर गिरने वाले का संग नहीं और हे प्रेमी! याद करके देख लेना जिस दिन हमें उपदेश होता है उस दिन हमारी श्रद्धा क्या है यदि वो श्रद्धा आज जीवन में पैदा हो सके आज इस समय तो हे प्रेमी! इसी समय से भजन की डोर जुड़ सकती है। यदि वो न पैदा होकर औऱ कई तरफ की है कई बातें हैं, कई प्रश्न हैं, कई संश्य हैं तो फिर जितना मीठा हम डालते हैं मिठास उतनी आ जाती। जितना गुड़ हम डालते हैं स्वाद उतना आ जाता। **यह तो हमारे अपने ऊपर है हम कितना मीठा डालेंगे मिठास उतनी बढ़ेगी। तेरी जितनी श्रद्धा होगी नाम उतना ज्यादा प्रकट है।** हे प्रेमी! विनती है सोच आगे तुम्हारी है क्या करना चाहते हो क्या नहीं।

मार्ग तुम्हें समझाया जा सकता। मूल बात मैं फिर वही कहता हूं कुंसग से बचना क्योंकि कुसंगी आदमी न चलेगा न चलने देगा। संगत देरी से हो वो ठीक है पर कुसंग वो तो बिल्कुल न हो। कुसंग से बच गया तो ठीक क्योंकि यदि कुसंग रहा तो मिली हुई सत संगत भी असर नहीं करती।

तत् सत् हरि् ओम्

ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਨ ਭਗਤ

(ਜਨਮ ਲੈਣਾ ਪੂਰਨ ਦਾ ਰਾਜਾ ਸਲਵਾਨ ਦੇ ਘਰ ਵਿਚ)

ਦੋ ਬਰਸਾਂ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਨ, ਕਰੇ ਮਨੋਹਰ ਬਾਣੀ, ਅਤਿ ਸੁਖ ਦਾਨੀ।
ਉੱਪਰ ਕਰਨ ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਵਰਖਾ, ਚੜ ਅਕਾਸ਼ ਵਿਮਾਨੀ, ਸੁਰ ਨਰ ਗਿਆਨੀ।
ਬਰਾਹਮਨ ਭੱਟ ਅਸੀਸਾਂ ਕਰਦੇ, ਬੱਚਾ ਧਰਮ ਨਿਸ਼ਾਨੀ, ਚੜੇ ਜਵਾਨੀ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਅਜਿਹਾ ਬਾਲਕ, ਜੀਵਤ ਰਖੇ ਭਵਾਨੀ, ਗੜ ਕੀ ਰਾਨੀ।
ਤਿੱਨ ਬਰਸ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਨ, ਸੁੰਦਰ ਬੋਲੇ ਬੋਲੀ, ਆਲੀ ਭੋਲੀ।
ਚਾੜੂ ਪੰਘੂੜੇ ਝੂਟੇ ਦੇਂਦੀ, ਰਹੇ ਖੇਡਾਂਦੀ ਗੋਲੀ, ਵਿੱਚ ਵਿਚੋਲੀ।
ਸੌ-ਸੌ ਵਾਰੀ ਲਾਡ ਲਡਾਵੇਂ, ਮਾਅੋਂ ਕਹੇ ਮੈਂ ਘੋਲੀ, ਲੈ ਕਰ ਝੋਲੀ।
ਨਾਲ ਚਾਉ ਨਿੱਤ ਖੇਡੇ ਕਾਲੀ, ਸਾਥ ਲੈ ਹਮਜੋਲੀ, ਬਾਲਕ ਟੋਲੀ।
ਚਾਰ ਵਰਸ ਦਾ ਭਗਤ ਜੋ ਹੋਇਆ, ਕੱਨੀਂ ਪਾਏ ਵਾਲੇ, ਕਰਮਾਂ ਵਾਲੇ।
ਚੰਦਰਮਾ ਜਿਹਾ ਮੁਖ ਸੁੰਦਰ, ਕੰਵਲ ਨੈਨ ਦੇ ਕਾਲੇ, ਭੋਲੇ ਭਾਲੇ।
ਨਰਗਸ ਦੇਖ ਹੋਵੇ ਸ਼ਰਮਿੰਦੀ, ਬਿਨਾਂ ਮਦ ਮਤਵਾਲੇ, ਨਸ਼ੇ ਉਛਾਲੇ।
ਵੇਖ ਗਾਲ ਤੇ ਕਾਲੀਦਾਸ ਜੀ ਪਿਆ, ਦਾਗ ਗੁਲ ਲਾਲੇ, ਤਨ ਮਨ ਜਾਲੇ।
ਪੰਜ ਵਰਸ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਨ, ਪੰਜਾਂ ਨੂੰ ਵਸ ਕਰਦਾ, ਸੇਵਕ ਹਰ ਦਾ।
ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਹੰਕਾਰ ਲੋਭ ਮੋਹ, ਵਸ ਨ ਕਾਇਆਂ ਘਰ ਦਾ, ਕਰਦੇ ਡਰਦਾ।
ਸਾਧ ਸੰਤ ਕੋਈ ਬਡੇ ਦੂਸਰੇ, ਧਰ ਚਰਨੀਂ ਸਿਰ ਧਰਦਾ, ਜੋ ਕੁਝ ਸਰਦਾ।
ਛੇਵੇਂ ਵਰਸ ਭਗਤ ਦਾ ਮੱਥਾ, ਵਾਂਗਰ ਚੰਦ ਸਿਤਾਰੇ, ਚਮਕਾਂ ਮਾਰੇ।
ਕੋਮਲ ਬੈਨ ਨੈਨ ਮਿਗ੍ ਮਾਹੀ, ਸੁਰਖ ਰੰਗ ਰੂਖਸਾਰੇ, ਫੂਲ ਖਲਾਰੇ।
ਸੁੰਦਰ ਚਾਲ ਵਿਸ਼ਾਲ ਮੂਰਤੀ, ਬਾਲ ਸੀਸ ਪਰ ਧਾਰੇ, ਭੰਵਰੋਂ ਕਾਰੇ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਲਟਘਟੀ ਪਗੜੀ, ਸੁੰਦਰ ਪੇਚ ਸਵਾਰੇ, ਝਾਲਰ ਵਾਰੇ।
ਸੱਤ ਬਰਸ ਦਾ ਭਗਤ ਜੋ ਹੋਇਆ, ਸੱਤ ਬੋਲਦਾ ਬਾਣੀ, ਨਿਰ ਅਭਿਮਾਨੀ।
ਹਸਨ ਜਮਾਲ ਕਮਾਲ ਲਾਲ, ਲਬ ਖਾਲ ਗਾਲ ਤੇ ਮਾਨੀ, ਭਰੇ ਗੁਮਾਨੀ।
ਗੁਲ ਰੂਖਸਾਰ ਚਿਨਾਰ ਬਰਗ ਹੱਥ, ਉਂਗਲ-ਉਂਗਲ ਕਾਨੀ, ਖਾਸ ਇਰਾਨੀ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਯੁਸਫੋਂ ਸੋਹਣਾ, ਕਵਾਂ ਮੈਂ ਕਿਸਦਾ ਸਾਨੀ, ਏਸ ਜਬਾਨੀ।
ਅੱਠ ਬਰਸ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਨ, ਗੀਤ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਗਾਵੇ, ਮਨ ਹਰਖਾਵੇ।
ਪ੍ਰਾਤ ਕਾਲ ਕਰੇ ਉਠ ਪੂਜਾ, ਰੋਜ ਸਵੇਰੇ ਨਹਾਵੇ, ਤਿਲਕ ਲਗਾਵੇ।
ਬੰਦਨ ਕਰੇ ਮੁਕੰਦਨ ਨੂੰ, ਨਦ ਨੰਦਨ ਨਾਮ ਧਿਆਵੇ ਭੇਂਟ ਚਢਾਵੇ।
ਕਾਲੀ ਦਾਸ ਮਨ ਕਰੇ ਇਕਾਗਰ, ਸਦਾ ਸਮਾਧ ਲਗਾਵੇ, ਬਿਰਤੀ ਠਰਾਵੇ।
ਨੌ ਬਰਸ ਦਾ ਹੋਇਆ ਪੂਰਣ, ਸਿਖਦਾ ਤੀਰੰਦਾਜ਼ੀ, ਨੇਜੇ ਬਾਜੀ।
ਹੋ ਅਸਵਾਰ ਅਰਾਕੀ ਮੁਸਕੀ, ਘੋੜੇ ਤੁਰਕੀ ਤਾਜ਼ੀ, ਬਹਿੰਦਾ ਰਾਜ਼ੀ।
ਹੋਰ ਇਲਮ ਜੋ ਆਲਮ ਫਾਜ਼ਲ, ਸ਼ਾਦੀ ਜਿਵੇਂ ਸ਼ੀਰਾਜੀ, ਪਾਕ ਨਮਾਜ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਪਡੇ ਫਾਰਸੀ, ਹੋਣ ਪਡਾ ਕੇ ਰਾਜ਼ੀ, ਮੁੱਲਾ ਕਾਜ਼ੀ।
ਦਸਵੇਂ ਸਾਲ ਦਸਦੇ ਖਬਰਾਂ, ਜਾਨ ਵਤੀਸਰ ਭਾਜੇ, ਕਹਿੰਦੇ ਰਾਜੇ।

ਬਚਦਾ ਸਫਾ 19 ਤੇ...

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਿਮਾ

ਬੰਦੌਂ ਗੁਰੂ ਪਦ ਕੰਜ ਕ੍ਰਿਪਾ, ਸਿੰਧੁ ਨਰ ਰੂਪ ਹਰਿ।
ਮਹਾ ਮੋਹ ਤਮ ਪੁੰਜ ਜਾਸੁ,
ਵਚਨ ਰਵਿ ਕਰਨੀ ਕਰ।।

ਤੁਲਸੀ ਦਾਸ ਜੀ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਨੇ ਕਿ ਮੈਂ ਅਪਣੇ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਚਰਣ ਕਮਲਾਂ ਦੀ ਬੰਦਨਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਜੋ ਕਿ ਨਰ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸ਼੍ਰੀ ਹਰਿ ਭਾਵ ਭਗਵਾਨ ਦਾ ਰੂਪ ਹਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਚਨਾਂ ਨੇ ਸੂਰਜ ਦੀ ਕਰਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਨਾਲ ਮੇਰਾ ਮੋਹ ਰੂਪੀ ਹਨੇਰਾ ਦੂਰ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ।

ਸਬ ਧਰਤੀ ਕਾਗਜ ਕਰੂੰ, ਲੇਖਨੀ ਸਬ ਬਨ ਰਾਏ।
ਸੱਤ ਸਮੁੰਦ੍ ਕੀ ਮਸਿ ਕਰੂੰ
ਤੋ ਗੁਰੂ ਗੁਣ ਲਿਖਾ ਨ ਜਾਏ।।

ਕਬੀਰ ਜੀ ਫਰਮਾ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ ਜੇਕਰ ਮੈਂ ਸਾਰੀ ਧਰਤੀ ਦਾ ਕਾਗਜ਼ ਬਣਾ ਲਵਾਂ ਤੇ ਜਿੰਨੇ ਜੰਗਲਾਂ ਦੇ ਦਰਖਤ ਨੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਕਲਮ ਬਣਾ ਲਵਾਂ ਅਤੇ ਸੱਤਾਂ ਸਾਗਰਾਂ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦੀ ਸਿਆਹੀ ਬਣਾ ਲਵਾਂ ਤਾਂ ਵੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਲਿਖੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦੀ। ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਤੋਂ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਹ ਵਚਨ ਅਨੁਭਵ ਚ ਉੱਤਰਦੇ ਨੇ ਅਤੇ ਅੱਜ ਕਲ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਾਤਾਵਰਣ(ਮਾਹੌਲ) ਚਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਪੂਰਣ ਤੱਤਵੇਤਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਮਿਲਣੇ ਬੜੇ ਦੁਰਲੱਭ ਨੇ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਸ਼ਾਸਤਰ ਵੀ ਕਹਿ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ ਜਦ ਗੁਰੂ ਵਚਨ, ਸ਼ਾਸਤ੍ ਵਚਨ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਹਿਰਦੇ ਦਾ ਅਨੁਭਵ ਇਹ ਤਿੱਨੋਂ ਗੱਲਾਂ ਇਕੱਠੀਆਂ ਹੋ ਜਾਣ ਤਾਂ ਸਮਝੋ ਕਿ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪੂਰਣ ਗੁਰੂ ਜਾਂ ਕਾਮਿਲ ਮੁਰਸ਼ਿਦ ਮਿਲ ਗਏ ਨੇ। ਮੈਂ ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਸਦਕਾ ਹੀ ਅਪਣੇ ਹਿਰਦੇ ਦੇ ਅਨੁਭਵ ਲਿਖਣ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਸ਼ਾਸਤਰ ਕਹਿ ਵੀ ਰਹੇ ਨੇ—

ਸਰਵ ਵੇਦਾਂਤ ਸਿਧਾਂਤ ਗੋਚਰ ਤਮ ਗੋਚਰਮ।
ਗੋਬੀਂਦਮ ਪਰਮਾਨੰਦਮ ਸਦਗੁਰੂ ਪ੍ਰਣਤੋਸਮਿ।

ਕਿ ਸਾਰੇ ਵੇਦਾਂ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਵਾਲੇ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਕਾਰ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਣ ਵਾਲੇ ਪਰਮਾਨੰਦ ਸਵਰੂਪ ਗੁਰੂਦੇਵ ਸ਼੍ਰੀ ਭਗਵਾਨ ਨੂੰ ਮੈਂ ਨਮਸਕਾਰ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਗੱਲ Practical ਹੈ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਅਗਿਆਨ ਅੰਧਕਾਰ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਹਨ। ਸ਼ੁਰੂ ਵਿੱਚ ਤੁਲਸੀਦਾਸ ਜੀ ਵੀ ਇਹੋ ਗੱਲ ਆਖਦੇ ਹੋਏ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਬੰਦਨਾ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਚਨਾਂ ਨੇ ਸੂਰਜ ਦੀ ਕਰਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਤੇ ਜਿਸਦੇ ਨਾਲ ਮੇਰਾ ਮੋਹ ਰੂਪੀ ਹਨੇਰਾ ਦੂਰ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਉਹ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਪਰਮਾਨੰਦ ਸਵਰੂਪ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਿਰਫ ਦਰਸ਼ਨਾਂ ਨਾਲ ਹੀ ਮਨ ਵਿੱਚ ਆਨੰਦ ਛਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਰਾਮਾਇਣਕਾਰ ਵੀ ਫਰਮਾ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ—

ਨਹੀਂ ਸ਼ੀਤਲ ਹੈ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਨਹੀਂ ਸ਼ੀਤਲ ਕੋਏ।
ਸ਼ੀਤਲ ਤੋ ਹੈਂ ਸੰਤਜਨ ਨਾਮ ਸਨੇਹੀ ਹੋਏ॥

ਕੀ ਕਹਿ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ ਨ ਤਾਂ ਚੰਦ੍ਰਮਾਂ ਸ਼ੀਤਲ ਹੈ, ਅਤੇ ਨ ਹੀ ਕੋਈ ਹੋਰ। ਸਿਰਫ ਸੰਤਜਨ ਹੀ ਸ਼ੀਤਲ ਨੇ ਪਰਮ ਆਨੰਦਿਤ ਨੇ ਕਿਉਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹਰ ਵੇਲੇ ਲੌ(ਧਿਆਨ) ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਵਿੱਚ ਲੱਗੀ ਹੋਈ ਹੈ।

ਗਾਵਹਿੰ ਸੁਨਹਿੰ ਸਦਾ ਮਮ ਲੀਲਾ।
ਹੇਤੂ ਰਹਿਤ ਪਰਹਿਤ ਰਤ ਸੀਲਾ।
ਮੁਨਿ ਸੁਨੁ ਸਾਧੁਨਹ ਕੇ ਗੁਣ ਜੇਤੇ।
ਕਹਿ ਨ ਸਕਹਿੰ ਸਾਦਰ ਸ਼ਰੁਤਿ ਤੇਤੇ॥

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਫਰਮਾ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ ਜਿਹੜੇ ਸਦਾ ਮੇਰੀ ਲੀਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਗਾਉਂਦੇ ਸੁਣਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਬਗੈਰ ਕਾਰਨ ਹੀ ਦੂਜਿਆਂ ਦੇ ਭਲੇ ਵਿੱਚ ਲੱਗੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਹੇ ਮੁਨੀ! ਸੰਤਾਂ ਦੇ ਜਿੰਨੇ ਗੁਣ ਨੇਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸਰਸਵਤੀ ਅਤੇ ਵੇਦ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ। ਦੂਰੋਂ ਦਰਾਜ ਤੋਂ ਸੰਗਤ ਆਕੇ ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਕੇ ਅਤੇ ਅਲੌਕਿਕ ਪਰਵਚਨ ਸੁਣ ਕੇ ਅਪਣੇ ਹਿਰਦੇ ਨੂੰ ਸ਼ਾਂਤ ਸ਼ੀਤਲ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਜਣਾਉਂਦੇ ਨੇ। ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜਦੇ ਹਨ

ਤੇ ਦਿਲ ਦਾ ਤਾਲਾ ਖੋਲ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਸਾਰੇ ਗ੍ਰੰਥ ਸਮਝ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦੇ ਨੇ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹਕੇ ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਚਨਾਂ ਤੇ ਚੱਲਕੇ ਜੋ ਆਨੰਦ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਤਾਂ ਮਹਿਸੂਸ ਹੀ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਲਿਖਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਪੜ੍ਹ

"ਰਾਮ ਭਗਤੀ ਚਿੰਤਾਮਣਿ ਸੁੰਦਰ।
ਬਸਹੁੰ ਗਰੁੜ ਉਰ ਜਾ ਕੇ ਅੰਦਰ।
ਪਰਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਰੂਪ ਦਿਨ ਰਾਤੀ,
ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਏ ਕਛੁ ਦਿਆ ਘ੍ਰਿਤ ਬਾਤੀ।

ਰਾਮਾਇਣ ਦੀ ਇਸ ਚੌਪਾਈ ਨੂੰ ਚਾਹੇ ਕਰੋੜਾਂ ਬਾਰ ਪੜ੍ਹ ਜਾਇਏ। ਬਸ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਉੱਤੋਂ ਟੱਪਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲ ਹੈ ਜਦੋਂ ਤਕ ਪੂਰਣ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੇ ਉਦੋਂ ਤੱਕ ਮਨ ਮੰਦਰ ਵਿੱਚ ਉਜਾਲਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਜਦੋਂ ਪਰਮ ਦਇਆਲੁ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਕੇ ਗਿਆਨ ਕਰਾਉਂਦੇ ਨੇ ਤੇ ਫਿਰ ਅਨੁਭਵ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦਿਨ ਰਾਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ। ਪਰ ਕਿੱਥੇ ਹੈ? ਕਾਕਭਸ਼ੁੰਡੀ ਜੀ ਕਹਿੰਦੇ ਨੇ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਦੀ ਭਗਤੀ ਚਿੰਤਾਮਣੀ ਵਰਗੀ ਸੋਹਣੀ ਹੈ।**"ਬਸਹੁੰ ਗਰੁੜ ਉਰ ਜਾਕੇ ਅੰਦਰ"**ਹੇ ਗਰੁੜ ਜੀ! ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ ਦਿਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਨਿਵਾਸ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸਦਾ ਜੋ ਪਰਮ ਆਨੰਦ ਹੈ ਉਹ ਤਾਂ ਜਿਸਨੇ ਸ਼੍ਰੀ ਸਦਗੁਰੂ ਦੇਵ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਸਦਕਾ ਜਾਣਿਆ ਹੈ ਉਹੀ ਅਨੁਭਵ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪੂਰਣ ਤੱਤਵੇਤਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਨਾਲ ਮੇਲ ਕਦੋਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪੂਰਣ ਸੰਤ ਮਿਲਣ

ਸੰਤ ਵਿਸੁਧ ਮਿਲਹਿ ਪੁਨਿ ਤੇਹੀ।
ਜਿਵਹੀਂ ਰਾਮ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਿ ਜੇਹਿ॥

ਵਿਸ਼ੁਧ(ਸੱਚੇ) ਸੰਤ ਉਸੀ ਨੂੰ ਮਿਲਦੇ ਨੇ ਜਿਸ ਤੇ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਦੇ ਨੇ।

ਸਬ ਕਰ ਫਲ ਹਰਿ ਭਗਤੀ ਸੁਹਾਈ।
ਸੋ ਬਿਨ ਸੰਤ ਨ ਕਾਹੂੰ ਪਾਈ।

ਸਾਰੇ ਪੁੰਨ ਕਰਮਾਂ ਦਾ ਫਲ, ਜੋ ਵੀ ਜਪ, ਤਪ, ਪੂਜਾ, ਪਾਠ ਕਰਦੇ ਹੋ। ਕੀ ? ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਹਰਿ ਦੀ ਭਗਤੀ ਮਿਲੇ ਅਤੇ ਜੋ ਪੂਰਣ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

"ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਸੰਤ ਮਤ ਏਹੂ
ਸਕਲ ਸੁਕ੍ਰਿਤ ਫਲ ਨਾਮ ਸਨੇਹੂ।
ਸ਼੍ਰੁਤੀ ਸਿਧਾਂਤ ਜੇਹਿ ਉਰਘਾਰੀ
ਰਾਮ ਭਜੋ ਸਬ ਕਾਮ ਬਿਸਾਰੀ।"

ਰਾਮਾਇਣ ਦੀ ਇਹ ਬਹੁਤ ਸੁੰਦਰ ਚੌਪਾਈ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਰ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਵੇਦ ਪੁਰਾਣ ਨੇ ਜੋ ਸਾਰੇ ਸੰਤਾ ਦੇ ਅਨੁਭਵ ਦੇ ਵਚਨ ਹਨ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਸ਼ੁਭ ਕਰਮਾਂ ਦਾ ਫਲ ਕੀ ਕਿ ਨਾਮ ਦੇ ਨਾਲ ਪ੍ਰੇਮ ਕਰਨਾ। ਰਾਮਾਇਣ ਵਿੱਚ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਨਾਮ ਜਾਂ ਜਾਸੁ ਸ਼ਬਦ ਵਰਤਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਜੋ ਨਾਮ ਹੈ ਉਹ ਬੋਲਣ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ, ਅਕਥ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਵਸਿਸ਼ਠ ਜੀ ਨੇ ਭਗਵਾਨ ਦਾ ਨਾਮ ਇਸ ਲਈ ਰਾਮ ਰੱਖਿਆ ਕਿਉਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇਂ ਦਿੱਵ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਨਾਲ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਇਹ ਉਹ ਹਸਤੀ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਸਭ ਵਿੱਚ ਰਮ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਭ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਾਮ ਰਖਿਆ 'ਰਾਮ' ਇਹ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਗੁਣਵਾਚੀ ਨਾਮ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰਾਮ, ਕ੍ਰਿਸ਼ਣ, ਹਰਿ, ਗੋਵਿੰਦ ਜੋ-ਜੋ ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਅਪਣੇ ਦਿਲ ਚ ਅਨੁਭਵ ਕੀਤਾ। ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਨਾਮ ਰੱਖ ਦਿੱਤੇ। ਅੱਜ ਕਲ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੂੰ ਤਾਂ ਮੰਨਦੇ ਨੇ ਪਰ ਜੋ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਦੇ ਵਚਨ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੰਨਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ। ਭਗਵਾਨ ਫਰਮਾ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ—

'ਪ੍ਰਥਮ ਭਗਤੀ ਸੰਤਨ ਕਰ ਸੰਗਾ'

ਪਹਲੀ ਭਗਤੀ ਕੀ ਹੈ ? ਸੰਤਾਂ ਦੀ ਸੰਗਤ ਕਰਨੀ। ਅਤੇ ਜਦੋਂ ਭਗਵਾਨ ਲੰਕਾਂ ਨੂੰ ਜਿੱਤ ਕੇ ਵਾਪਿਸ ਅਯੋਧਿਆ ਆਏ ਤਾਂ ਸਾਰੇ ਨਗਰ ਵਾਸਿਆਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਜਗ੍ਹਾ ਇਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਫਰਮਾ ਰਹੇ ਨੇ ਕਿ-

ਬੜੇ ਭਾਗ ਮਾਨੁਸ਼ ਤਨ ਪਾਵਾ,
ਸੁਰ ਦੁਰਲਭ ਸਦਗ੍ਰੰਥਨ ਗਾਵਾ।

ਚਲਦਾ.....

ਬਾਣੀ ਦਾ ਸਾਰ

ਚਲਦਾ.....

ਕਿਉਂਕਿ ਜੋੜ ਉਦੋਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਜੇ ਕਿਸੇ ਸਮੇ ਟੁਟਿੱਆ ਜਿਹੜਾ ਟੁਟਿੱਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਜੁੜਣ ਲਈ ਕਿਹਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਅਤੇ ਜਿਹੜਾ ਟੁਟਿੱਆ ਹੈ। ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਹਰ ਧਰਮ ਚ ਜੁੜਣ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ ਹੈ।

ਕੋਈ ਧਰਮ ਕੋਈ ਮਜਹਬ ਨਹੀਂ ਜੋ ਜੁੜਨ ਦੀ ਗੱਲ ਨਾ ਕਹੇ। ਕੁਲ ਮਿਲਾ ਕੇ ਸਭ ਨੇ ਗੱਲ ਇਕ ਜਗ੍ਹਾ ਰੱਖੀ ਕਿ ਜੁੜ। ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ। ਉਸ ਦੇ ਵਿੱਚ ਉਤਰ, ਉਸ ਨੂੰ ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿ ਗਏ—

ਸੁਨ ਸੰਧਿਆ ਤੇਰੀ ਦੇਵ ਦਿਵਾਕਰ।
ਅਧ ਪਤਿ ਆਧ ਸਮਾਈ॥

ਕਿ ਜਿਸ ਸਮੇ ਸੁੰਨ ਹੋ ਗਿਆ ਉੱਤਰ ਗਿਆ, ਸ਼ਾਂਤ ਹੋ ਗਿਆ ਅਪਣੇ ਅੰਦਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਸਵਰੂਪ ਚ ਸਮਾਇਆ ਓਹ ਸਮਾਂ ਤੇਰਾ ਆਰਤੀ ਦਾ ਹੈ। ਤੇਰੀ ਦੇਵ ਦਿਵਾਕਰ ਜਿਸ ਦੀ ਇਹ ਆਰਤੀ ਹੋ ਗਈ ਉਸਨੂੰ ਦੇਵੀ ਦੇਵਤਾ ਪੂਜਨ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀ। ਕਿਉਂਕੀ ਦੇਵ ਦਿਵਾਕਰ, ਦਿਵਾਕਰ ਭਾਵ ਸੂਰਜ, ਦੇਵ ਭਾਵ ਦੇਵਤਾ ਕਿ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਕਹੇ ਸੁਣੇ ਹੋਏ ਦੇਵਤਾ ਹੈ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਪਦਾਰਥ ਹੈ ਇਹ ਸਾਰੇ ਹੀ ਉਸਦੀ ਆਰਤੀ ਕਰ ਰਹੇ। ਲੱਗੇ ਹਨ ਦਿਰ ਰਾਤ।

ਇਹੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਉਚਾਰੇ ਕਿ ਸਾਰੀ ਕੁਦਰਤ ਹੀ ਆਰਤੀ ਕਰਨ ਚ ਲੱਗੀ ਹੈ। ਗਗਨ ਮੇਂ ਥਾਲ ਰਵੀ ਚੰਦ ਦੀਪਕ। ਸਾਰੇ ਅਪਣਾ-ਅਪਣਾ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ। ਕਿਸੇ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਚੀਜ਼ ਬਾਹਰਮੁਖੀ ਹੈ ਕਿਸੇ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਚੀਜ਼ ਅੰਤਰਮੁਖੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਦੇ ਲਈ ਬਾਹਰ ਮੁਖੀ ਹੈ ਨਕਸ਼ਾ ਉਸਦਾ ਵੀ ਵੈਸਾ ਜਿਸਦਾ ਅੰਤਰਮੁਖੀ ਨਕਸ਼ਾ ਉਸਦਾ ਵੀ ਵੈਸਾ। ਬਾਹਰ ਮੁਖੀ ਦੇਖਦਾ ਸੁਰਜ ਇੱਕ ਹੈ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਇੱਕ ਹੈ ਤਾਰੇ ਕਈ ਹਨ ਆਕਾਸ਼ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਬੜਾ ਥਾਲ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ। ਸੁਰਜ ਚੰਦ੍ਰਮਾ ਤਾਰੇ ਇਹ ਕੋਈ ਮੋਤੀ ਬਣਿਆ ਹੈ ਕੋਈ ਦੀਪਕ ਹੈ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਵੀ ਇਹੀ ਗੱਲ ਕਹਿ ਗਏ।

ਸੁਨ ਸੰਧਿਆ ਤੇਰੀ ਦੇਵ ਦਿਵਾਕਰ।
ਅਧ ਪਤ ਆਦਿ ਸਮਾਈ॥

ਕਹਿੰਦੇ ਕੋਈ ਦੇਵੀ, ਦੇਵਤਾ, ਸੂਰਜ, ਚੰਦਰਮਾ ਅਧਿ ਪਤਿ ਅਰਥਾਤ ਜੋ ਸਭ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲਣ ਵਾਲਾ ਜਾਂ ਜਿਸਨੂੰ ਸ਼ਕਤੀ ਕਿਹਾ ਜਾਵੇ Science ਉਸਨੂੰ energy ਕਰਕੇ ਕਹਿ ਗਈ। ਕਿਸੀ ਨੇ ਸ਼ਕਤੀ ਕਿਹਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦਾ ਵਚਨ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਾਰੇ ਹੀ ਉਸਦੀ ਆਰਤੀ ਚ ਮਸਤ ਹਨ। ਅਧਿ ਪਤੀ ਆਧ ਸਮਾਈ। ਸਬ ਸਮਾਏ ਹਨ ਉਸ ਵਿੱਚ। ਜੋ ਸਾਰਿਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਬੈਠਾ ਇਹ ਸਾਰੇ ਹੀ ਉਸ ਤੋਂ ਚਲਾਇਮਾਨ ਹਨ। ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਰਜਾ ਨ ਹੋਏ ਤਾਂ ਸੂਰਜ ਦਾ ਹਿਲਣਾ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਚੰਦਰਮਾ ਦੀ ਗਤੀ ਨਹੀਂ। ਦੁਨੀਆਂ ਥਿਰ ਹੈ। ਇਹ ਜੋ ਜੋ ਕੁਝ ਵੀ ਚਲਾਇਮਾਨ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਅਪਣੀ ਕਿਸੀ ਨ ਕਿਸੀ ਲੀਲਾ ਨਾਲ ਚਲਾ ਰਿਹਾ। **ਸਿੱਧ ਸਮਾਧ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ** ਭਾਵ ਕਿ ਸਿੱਧ, ਸਿੱਧ ਭਾਵ ਜਿਸਨੇ ਅਪਣਾ ਜੀਵਨ ਬਹੁਤ ਗਹਰੇ ਤਪ ਚ ਉਤਾਰ ਦਿੱਤਾ। ਇਕ ਚੀਜ਼ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਜਬਰਦਸਤੀ ਪੈ ਗਿਆ ਡੁਬ ਕੇ ਪੈ ਗਿਆ **ਸਿੱਧ ਸਮਾਧ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ।** ਸਮਾਧੀਆਂ ਬਹੁਤ ਲਗਾ ਲਈਆਂ ਕਿੰਨੇ-ਕਿੱਨੇ ਸਾਲ, ਏਕਾਗ੍ਰਚਿੱਤ ਹੋਕੇ ਲੱਗੇ ਰਹੇ ਪਰ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਕਿਉ ਨਹੀਂ ਅੰਤ ਪਾਇਆ ਕਿਉਕਿ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਇਹ ਯਾਤਰਾ ਜਿਸ ਨੇ ਵੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਇਹ ਵਿਚਕਾਰੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ। ਇਹ ਉਹ ਹਿਸਾਬ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਆਦਮੀ ਰੇਲ ਚ ਚੜ੍ਹਿਆ ਬੇਚਾਰਾ ਚੜ੍ਹ ਕੇ ਪੁਛਦਾ ਕਿ ਜੀ ਇਹ ਰੇਲ ਕਿੱਥੋਂ ਚੱਲੀ ਤਾਂ ਸਾਰੇ ਯਾਤਰੀ ਕਹਿੰਦੇ ਭਾਈ ਤੂੰ ਜਿੱਥੇ ਜਾਣਾ ਉਥੋਂ ਦੀ ਟਿਕਟ ਲੈ ਇਹਦਾ ਕੋਈ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿੱਥੋਂ ਚੱਲੀ। ਉਤਰਨਾ ਕਿੱਥੇ ਉਹ ਦੱਸ ਉੱਥੋਂ ਉਤਾਰ ਦੇਣਾ ਚੱਲੀ ਦਾ ਕੋਈ ਪਤਾ ਨਹੀਂ । ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਯਾਤਰਾ ਉਹ ਹੈ। ਇਹ ਸਭ ਦੇ ਅੰਦਰ ਚਲਦੀ

ਜਾ ਰਹੀ ਪਰ ਇਹ ਸਵਾਲ ਜਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਕਿ ਕਿੱਥੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਿੱਥੇ ਖਤਮ। ਇਹ ਨਹੀਂ ਗੁਰੂ ਹਰ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ ਅੱਠਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸੀ ਬਾਲ ਅਵਸਥਾ ਸੀ ਕੋਈ ਮੁਸਲਿਮ ਸੱਜਣ ਮਿਲਨ ਆਇਆ। ਸੱਜਣ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿਉਂਕਿ ਕਦੀ-ਕਦੀ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵਿਚਾਰ ਆਉਂਦਾ ਵਿਚਾਰ ਜਿਸ ਸਮੇ ਜਾਗਦਾ ਉਸ ਸਮੇ ਪਛਾਣ ਹੁੰਦੀ ਸੰਤ ਕੌਣ। ਕਿਉਂਕਿ ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਕ ਵਚਨ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੰਤ ਦੀ ਪਛਾਣ ਬਿਨਾਂ ਭਾਗਾਂ ਤੋਂ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ। ਸਾਰਾ ਜੀਵਨ ਇੱਕੋ ਚੀਜ ਦਾ ਚਸ਼ਮਾ ਲੱਗਾ ਮਜਹਬ ਜਾਂ ਜਾਤਿ। ਜਾਤ ਹੋ ਗਈ, ਮਜਹਬ ਹੋ ਗਈ, ਧਰਮ ਹੋ ਗਏ, ਨਸਲ ਹੋ ਗਈ। ਇਹੋ ਇਕ ਚਸ਼ਮਾ ਲੱਗਾ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਇਸੇ ਚੀਜ਼ ਨਾਲ ਦੇਖਦਾ। ਸੰਤ ਸਮਝੇ ਕੌਨ ? ਕਿਸੇ ਨੇ ਗੁਰੂ ਹਰ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ ਕੋਲੋਂ ਇਕ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਪੁਛਿਆ ਕਿ ਜੀ ਜੋ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਨਾਮ ਜੋ ਸੱਚਾ ਨਾਮ ਤੁਸੀ ਕਹਿੰਦੇ ਫਰਮਾਉਂਦੇ ਹੋ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ। ਹਰ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਜੀ ਨੇ ਇਕ ਜਬਾਵ ਦਿੱਤਾ ਕਹਿੰਦੇ ਭਾਈ ਨ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਆਦਿ ਫੜਨ ਜਾਈਂ ਨ ਅੰਤ ਫੜਨ ਜਾਈਂ। ਜਿਥੋਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕਿਰਪਾ ਕਰਣ ਉਥੋਂ ਫੜ ਕੇ ਚਲ ਪਈ। ਇਹ ਕਦੀ ਨ ਲੱਭਣ ਜਾਵੀਂ ਕਿ ਆਦਿ ਕਿਆ ਹੈ ਅੰਤ ਕਿਆ ਹੈ। ਕਿਉਂਕਿ ਉਸਦਾ ਆਦਿ ਅੰਤ ਹੱਥ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ। ਕਿਸੇ ਨੇ ਅੰਤ ਪਾਇਆ ਨਹੀਂ ਜਿਸ ਨੇ ਫੜਿਆ ਉਸਨੇ ਵਿਚਕਾਰੋਂ ਫੜਿਆ ਬਸ ਨਾਲ ਹੈ ਇਹ ਉਹ ਯਾਤਰਾ ਹੈ ਵਿਚਕਾਰੋਂ ਬੈਠੇ ਤੁਪ ਪਵੋ। **ਸਿੱਧ ਸਮਾਧ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ**। ਅੰਤ ਕਿਸੀ ਨੇ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ **ਅਲਖ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਹੀ** ਜੋ ਅਲਖ ਹੈ ਅਲਖ ਦਾ ਅਰਥ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕੋਈ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਨ ਲਗਾ ਸਕੇ ਜਿਸਦੇ ਉਪਰ ਕੋਈ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਟਿਕਾ ਨ ਸਕੇ ਉਸਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਅਲਖ। **ਅਲਖ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਏ** ਇਹ ਲਖਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿੰਦੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕਿਰਪਾ ਕਰ ਦੇਣ ਤਾਂ ਮੇਲ ਹੋ ਗਿਆ ਸੰਧਿਆ ਹੋ ਗਈ ਜੋ ਤੈਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਉਹ ਮਿਲ ਗਿਆ ਪਰ ਤੂੰ ਕਹੇਂ ਪੂਰਾ ਕੀ ? ਉਹ ਨਹੀਂ ਹੱਥ ਆਣਾ। ਜਿਸ ਦੇ ਨਾਲ ਤੇਰੀ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਹੋ ਗਈ ਤੈਨੂੰ ਉਨਾਂ ਮਿਲ ਗਿਆ। ਫਿਰ ਜੇ ਕਹੋ ਕਿ ਪੂਰਾ ਹੈ ਕੀ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਪੂਰੇ ਦਾ ਅਰਥ ਦੇਸੀ ਭਾਸ਼ਾ ਚ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦਾ ਵਚਨ ਹੈ-

ਗਈ ਪੇਸਰੀ ਲੂਨ ਕੀ ਥਾਹ ਸਿੰਧੁ ਕੀ ਲੇਨ।
ਆਪਣ ਹੀ ਕੋ ਖੁਰ ਗਈ ਕਹਿ ਕੌਣ ਮੁਖ ਦੇਨ।।

ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਕਹਿੰਦੇ ਕਿ ਲੂਣ ਦੀ ਡਲੀ ਕਿਸੇ ਵਿਚਾਰਵਾਨ ਨੇ ਕਿਸੀ ਰੱਸੀ ਧਾਗੇ ਨਾਲ ਬੰਨ ਕੇ ਸਮੁੰਦਰ ਚ ਤਾਂ ਪਾਈ ਕਿ ਸਮੰਦਰ ਨਾਪੀਏ ਕਿੰਨ੍ਹਾਂ ਗਹਿਰਾਈ ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਤੱਕ ਤਾਂ ਭਾਰ ਮਹਸੂਸ ਹੋਇਆ ਦੋਬਾਰਾ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਬਾਹਰ ਕੱਢਿਆ ਤਾਂ ਪੇਸਰੀ ਹੈ ਨਹੀਂ। ਬਸ ਰੱਸੀ ਰੱਸੀ ਹੈ।

ਹੁਣ ਜੇ ਕਹੋ ਡਲੀ ਹੈ ਤਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਦੇ ਵਿੱਚ ਪਰ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਹੁਣ ਕੱਢਨੀ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂ ਕਿਉਂਕਿ ਜਿਹੜਾ ਪਤਾ ਲੈਣ ਗਿਆ ਉਹ ਵਿੱਚ ਹੀ ਖੁਰ ਗਿਆ। ਕੁਝ ਅਜਿਹਾ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੈ। ਜੋ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਨਾਪਣ ਗਏ ਉਹ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਗਏ। ਜੋ ਬੋਲਣ ਗਏ ਉਹ ਰਹਿ ਗਏ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਕੁਝ ਸਮਝ ਨਹੀਂ। ਜੋ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਉਹ ਨਜਦੀਕੀ-ਨਜਦੀਕੀ ਅਨੁਭਵ ਤਾਂ ਕਹਿ ਦਿੱਤੇ ਪਰ ਗਹਿਰਾਈ ਕਹੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕੀ ਤਾਂ ਕਰਕੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਵਚਨ ਕੀਤਾ।

ਅਲਖ ਨ ਲਖਿਆ ਜਾਈ।

ਅੰਤ ਚਲਕੇ ਜੋ ਅਲਖ ਹੈ। ਅਲਖ ਅਰਥਾਤ ਨਿਚੋੜ ਅਲਖ ਅਰਥਾਤ ਅਜਿਹਾ ਜਿਸ ਦੇ ਉੱਪਰ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਨ ਟਿਕੇ ਉਹ ਲਖਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ। ਠੰਡਕ ਵੀ ਹੈ, ਪਰਮ ਸ਼ਾਂਤੀ ਹੈ ਮਸਤ ਹੋ ਗਿਆ ਪਰ ਜੇ ਕਹੇ ਬੋਲ ਕੇ ਦੱਸੇ ਤਾਂ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਕਿੰਨਾ ਕ ਦੱਸ ਸਕਦਾ ਬੋਲ ਕੇ ਜਿੰਨਾ ਕ ਚਿਰ ਤੱਕ ਬੁਧੀ ਮਨ ਜੀਵਿਤ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਜਿਉਂ ਜਿਉਂ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸਮਝ ਆਉਣੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ ਤਿਉਂ ਤਿਉਂ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮਨ ਮਰਿਆ। ਮਨ ਮਰਿਆ, ਬੁੱਧੀ ਮਰੀ ਜਿਸ ਸਮੇ ਮਨ ਅਤੇ ਬੁੱਧੀ ਮਰੇ ਉਸੇ ਸਮੇ ਇਹ ਚਸ਼ਮੇ ਧਰਮ ਮਜਹਬ

ਦੇ ਸਾਰੇ ਟੁਟ ਗਏ। ਸਾਰੇ ਚਸ਼ਮੇ ਟੁਟ ਗਏ ਸਿਰਫ ਤੇ ਸਿਰਫ ਨਜ਼ਰ ਆਏ ਸੰਤ ਜਨ ਅਤੇ ਸੰਤ ਦੀ ਸਮਝ ਵੀ ਓਦੋਂ ਹੀ ਆਉਣੀ ਜਿਸ ਸਮੇ ਇਹ ਧਰਮ ਮਜਹਬ ਦਾ ਚਸ਼ਮਾ ਖੁੱਲਣਾ। ਜਿਸ ਸਮੇ ਤੱਕ ਇਹ ਚੜ੍ਹਿਆ ਹੈ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਹਾਲਤ ਇੰਝ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਹਰਾ ਜਾਂ ਪਿਲੇ ਰੰਗ ਦਾ ਚਸ਼ਮਾ ਲਗਾ ਲਿਆ ਹੁਣ ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆ ਚ ਚੀਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦੁਨਿਆ ਹਰੀ ਹੋ ਗਈ, ਪੀਲੀ ਹੋ ਗਈ। ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ! ਨ ਦੁਨਿਆ ਹਰੀ ਨ ਪੀਲੀ ਤੂੰ ਚਸ਼ਮਾ ਉਤਾਰ ਦੁਨਿਆ ਰੰਗ ਬਿਰੰਗੀ ਹੈ। ਹੁਣ ਜੇ ਅੱਖਾਂ ਦੇ ਅੱਗੇ ਢੱਕਣ ਆ ਗਏ ਹੁਣ ਕੀ ਪਛਾਣੇ ਤਾਂ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜੇ ਅਲਖ ਚਾਹੀਦਾ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਮਾਰਗ ਕੁਝ ਹੋਰ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਮਾਰਗ ਉਪਰੋਂ ਗਾ ਕੇ ਕਹਿ ਕੇ ਨਹੀਂ। ਉਸਦਾ ਮਾਰਗ ਕਿਸੀ ਪੂਰਨ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਕੋਲੋਂ ਮੰਗਿਆਂ ਹੈ। ਬਾਣੀਕਾਰ ਇਕ ਵਚਨ ਜੋ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਦੋਹਰਾਈ ਜਾਂਦੇ, ਬ ਤ ਜਗ੍ਹਾ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਚ ਦਰਜ ਹੈ।

ਨਾਮ ਪਦਾਰਥ ਨਾਨਕ ਮਾਂਗੇ।

ਦ ਆ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਮੰਗਦੀ ਮਹਾਪੁਰਖ ਕਹਿੰਦੇ ਨ । ਪਦਾਰਥ ਭਾਵ ਕਿ ਕੁਝ ਹੈ ਜੋ ਮੰਗਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਪਰ ਜੇ ਕੋਈ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਹੋਵੇ ਦੇਵੇਗਾ ਤਾਂ। ਤਾਹੀਂ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੈ, ਜੇ ਨਾਮ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਹੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਉਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾ ਫਿਰ ਅੱਖਰ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਕੰਮ ਹੈ। ਅੱਖਰ ਬਹੁਤ ਹੋ ਸਕਦੇ ਬਾਹਰ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਕਹਿਣ ਨੂੰ ਹੈ ਪਰ ਇਸ ਸਾਰੇ ਕਹਿ ਹੋਏ ਦਾ ਇਕ ਨਿਚੋੜ ਵੀ ਹੈ। ਉਹ ਨਿਚੋੜ ਹੈ ਅੰਦਰ। ਜੋ ਅੰਦਰ ਹੈ, ਜੋ ਅੰਦਰ ਹੈ ਉਹ ਪੂਰਨ ਸਾਰ ਹੈ, ਮੱਖਣ ਹੈ। ਬਾਹਰ ਹੈ ਲੱਸੀ। ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿੰਦੇ

ਮਾਖਨ-ਮਾਖਨ ਸੰਤਨ ਖਾਇਓ,
ਛਾਛ ਜਗਤ ਬਰਤਾਨੀ।

ਕਹਿੰਦੇ ਲੱਸੀ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ ਗਈ, ਮੱਖਣ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਕੋਲ। ਮੱਖਣ ਦਾ ਅਰਥ ਜੋ ਕੁਝ ਵੀ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਚ ਪੜਿਆ ਉਸਦਾ Practical ਸਾਰ। ਉਸਦਾ ਨਿਚੋੜ ਤਾਂ ਅੱਗੇ ਕਬੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ—

ਲੇਹੋ ਆਰਤੀ ਹੋ ਪੁਰਖ ਨਿਰੰਜਨ
ਸਦਗੁਰੂ ਪੂਜੋ ਭਾਈ

ਚਲਦਾ.....

ਪ੍ਰ 14 ਦਾ ਬਚਦਾ.....

ਇਹ ਬਾਲਕ ਅਵਤਾਰ ਧਰਮ ਦਾ, ਹੋਣ ਅਕਾਸ਼ ਅਵਾਜੇ, ਕਹਿੰਦੇ ਬਾਜੇ।
ਮਾਨ ਰੂਪ ਪੋਸ਼ਾਕ ਬਸੰਤੀ, ਮਸਤਕ ਤਿਲਕ ਵਿਰਾਜੇ, ਸੁੰਦਰ ਸਾਜੇ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਖੁਸ਼ੀ ਦੀ ਨੌਬਤ, ਸਦਾ ਦੁਆਰੇ ਬਾਜੇ, ਜਿਉਂ ਘਨ ਗਾਜੇ।
ਬਰਸ ਯਾਰਵੇਂ ਇਲਮ ਨਾਗਰੀ, ਪੂਰਨ ਨੇ ਪੜ੍ਹ ਲੀਤਾ, ਸਮਝੋ ਮੀਤਾ।
ਚਾਰ ਵੇਦ ਖਟ ਪੜ੍ਹੇ ਸ਼ਾਸਤਰ, ਹੋਰ ਭਗਵਦ ਗੀਤਾ, ਪਰਮ ਪੁਨੀਤਾ।
ਦਸੋਂ ਇੰਦਰੇ ਚਿੱਤ ਯਾਰਵੇਂ, ਯਾਰਾਂ ਨੂੰ ਵਸ ਕੀਤਾ, ਅਮ੍ਰਿਤ ਪੀਤਾ।
ਕਾਲੀਦਾਸਾ ਬਾਲ ਬ੍ਰਹੱਮਚਾਰੀ, ਜਿਉਂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਗੀਤਾ, ਮਨ ਨੂੰ ਜੀਤਾ।
ਬਰਸ ਬਾਰ੍ਹਵੇ ਦੇਣ ਬਧਾਈਆਂ, ਆਵਣ ਵਾਰੋ-ਵਾਰੀ, ਸਭ ਨਰ-ਨਾਰੀ।
ਸੁੰਦਰ ਰੂਪ ਅਨੂਪ ਮੂਰਤੀ, ਘੜੀ ਆਪ ਤ੍ਰਿਪੁਰਾਰੀ, ਵਿਸ਼ੂ ਲਿਖਾਰੀ।
ਕਾਜ ਏਸ ਦਾ ਕਰੋ ਸ਼ਤਾਬੀ, ਢੂੰਢੋ ਰਾਜ ਕੁਮਾਰੀ, ਬਾਲ ਕੁੰਵਾਰੀ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਬਨੇ ਬਿਧ ਸੋਈ, ਜਿਵੇਂ ਹੁਕਮ ਕਰਤਾਰੀ, ਧੁਰ ਸਰਕਾਰੀ॥

ਚਲਦਾ.....

पृष्ठ न०11 का शेषभाग...

दशहरा नहीं, दशहरा एक छुट्टी से ज्यादा नहीं। जिस समय श्री राम जी के साथ यह घटना घटी युद्ध हुआ तो दरअसल वो स्थिति क्या है। हे प्रेमी! वो स्थिति ऐसी नहीं कि मारने वाला मन बना के मारने जा रहा।

बल्कि श्री राम अन्तिम समय तक जब तक रावण को तीर नहीं लगा था तब तक भी इस प्रयास में हैं कि कुछ ऐसा हो जाए कि यह बदल जाए। क्यों बदल जाए क्योंकि श्री राम लक्ष्मण को समझा रहे थे। लक्ष्मण कहता कि इस रावण ने भाभी का अपहरण किया। इस रावण ने कई-कई औऱ पाप किये ऋषि-मुनियों को मारा दुख दिया तो श्री राम कहते कि लक्ष्मण रावण का मरना एक बहुत बड़े विद्वान का इस सृष्टि से उठना है और बिना विद्वानों के इस सृष्टि में जीने का कोई आधार नहीं। वहां पर यह नहीं कहा कि यह तो राक्षस है, यह उस Category का है। विद्वान, विद्वान है क्योंकि शिक्षक, शिक्षक है। वो चाहे इस जाति का हो चाहे उस जाति का जिसे कुछ पता है, ज्ञात है कुछ उसका ज्ञान ही उसका परिचय है। फिर वो जाति नीची हो उंची हो कोई फर्क नहीं—देवता हो, राक्षस हो कोई अन्तर नहीं। अब रावण जैसा प्रकांड विद्वान, नीती शास्त्र का ज्ञाता जब उस आदमी ने बहुत कुछ उलट पुलट किया क्योंकि जानकार है। जैसे कहावत है कहते अनपढ़ चोर वो छोटी चोरी करेगा।

जैसे अभी कुछ दिन पहले खबरें आईं छः यु०पी के रहने वाले अनपढ़ लड़के वो गये तो चोरी करने A.T.M. उठाने। अब उठाकर क्या लाये? बिल जमा करने वाली मशीन। इतना बोझा भी ढोया फिर पकड़े गये, पिटाई हुई। अनपढ़ चोर चोरी भी अपने तरीके की करेगा। पढ़ा लिखा चोर बैठे-बैठे किसी के बैंक खाते से अपने बैंक खाते में पैसे डाल देगा। जिसे बाद में बैंक पकड़ ही न पायें क्योंकि जैसी शिक्षा है उस शिक्षा के उपयोग और दुरूपयोग की बात है। रावण की शिक्षा तो बहुत है बहुत अच्छी है, बहुत उच्च दर्जे की है परन्तु प्रयोग उल्टा हो गया। अब जब प्रयोग उल्टा हो गया तो उसको ऊपर रोकने वाला नहीं। **ऋषि मुनि तपोबल लगायें वो कहता तपों को तो मैं पहले ही कर चुका हूं सवाल ही नहीं कोई मंत्रबल लगायें वो भी पूरा नहीं इसिलिए जो-जो भी कोई कुछ करता था उसकी काट रावण के पास पहले ही है।** सबसे पहले रावण ने फिर काम शुरू किया अपहरण। कुबेर आया उसका जो साधन था विमान था वो छीन लिया। वो जाकर रोये कभी किसी के पास, कभी किसी के पास कौन समझाये। जो जिसके पास अच्छा था सो छीन लिया। मन्दोदरी को जब देखा तो उसके पिता को कहता कि देना कि नहीं। कहता ले ले। मांगने का तरीका था क्योंकि बल है पिछे जबरदस्त बल है तपोबल, राजबल, योगबल मतलब किसी से सीधा एक ही बात है देना या छीन लूं। एक ही बात क्योंकि जितनी विद्या थी सारी विद्या लूटने को लगा दी।

विद्या तो बहुत उच्च थी पर लगाई लूटने के लिए किसी को मारने तंग करने के लिए तो जब लक्ष्मण कहता जी इसको मारना बड़ा जरूरी श्री राम कहते यह पलट जाए तो बहुत सही है। यदि पलट जाएगा तो सृष्टि पर एक बहुत बड़े विद्वान का जन्म होगा।

क्रमश.....

उपवास के कुछ नियम

शरीर को विकारमुक्त करने, रोगों कैसे मुक्ति पाने, अखण्ड स्वास्थ्य एवं शक्ति का जागरण करने अथवा ईश्वर के निकट आने के लिए उपवास सबसे आवश्यक एवं सरल साधन है। उपवास में हम स्थूल से सूक्ष्म की ओर गति करते हैं, शरीर का शुद्धिकरण होता है और शरीर विकारमुक्त होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। मानस योग साधना में युक्ति युक्त उपवास का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक साधक को समय-समय पर उपवास की सलाह दी जाती है। अल्पकालीन, दीर्घकालीन, नवरात्र उपवास आदि इसके अनेक प्रकार हैं जिनकी जानकारी हम देते रहते हैं। यहां केवल इतना समझना आवश्यक है कि उपवास काल में साधक को कुछ मौलिक बातों का ध्यान रखना चाहिये तभी उपवास का पूरा लाभ मिल पाएगा।

➢ उपवास काल में नित्य एनीमा लेना चाहिए।

➢ यदि सम्भव हो तो उपवास में दिन-रात शुद्ध वायु में रहना चाहिए।

➢ उपवास में टहलना अथवा कसरत तभी करनी चाहिए, जब उसके लिए शरीर में यथेष्ट शक्ति प्रतीत हो। मल के उभाड़ के समय आराम करना चाहिए।

➢ उपवास काल में जब विष उखड़कर रक्त में मिल जाता है (और यह कई बार होता) तब उपवासी को कमजोरी मालूम होती है, नींद ठीक तरह नहीं आती, बुरे-बुरे सपने आते हैं। उस समय उपवास के लाभ के प्रति संदेह होने लगता है। उस पर से श्रद्धा उठती हुई सी प्रतीत होती है। उस समय यह याद रखिये कि आप प्रकृति के Operation Theatre की मेज पर लेटे हुए हैं और प्रकृति बिना किसी चाकू या औजार के आपके शरीर के रोगों को निकालने के लिए आश्चर्यजनक ऑप्रेशन कर रही है, जिसे करने में कोई अन्य समर्थ नहीं है। इस समय केवल एनिमा ले लेने से सारी परेशानी दूर हो जायेगी।

➢ उपवास में जब आप लेटने के बाद उठकर बैठें तो बहुत धीरे-2 बैठें, अन्यथा आपको चक्कर आ सकता है। चक्कर आना कोई खतरनाक नहीं है, विकार के उभाड़ के कारण ऐसा हो सकता है। इस चक्कर से घबराकर यदि समय से पहले उपवास तोड़ दिया जाए तो उपवास के लाभ से वंचित रह जायेंगे।

➢ उपवास काल में केवल सादा पानी पीना ठीक नहीं है। पानी में थोड़ा नींबू और शहद या इसके अभाव में थोड़ा सा गुड़ मिलाकर पीना अच्छा है। इससे श्लेष्मा के छूटने में सहायता मिलती है एवं वह पतला हो जाता है, और आसानी से निकल जाता है। यदि पानी में थोड़ा सा किसी फल का रस मिलाकर पिया जाए तो वह सर्वोत्तम है। पानी जितनी बार इच्छा हो पीना चाहिए। यदि उपवास लम्बा हो तो किसी सब्जी का रस या निंबू का रस भी पानी में मिलाकर लिया जा सकता है।

➢ प्रारम्भिक अवस्था में साप्ताहिक अथवा पाक्षिक उपवास किया जा सकता है। माह में 3 दिनका उपवास भी बहुत लाभकारी है।

➢ किसी रोग विशेष की दृष्टि से उपवास किसी श्रेष्ठ अनुभवी मार्गदर्शक की देख-रेख में ही करना चाहिए।

➢ यथासम्भव दो बार स्नान अवश्य करें।

➢ याद रखें उपवास से शरीर का वजन कम होता है, शक्ति नहीं।

✵ ✵ ✵ ✵

Ei bn n bqbeb

Bahumpi ce samhita bhasamano, na takkaro hoti naro pamatto gopova gavo ganayam paresam, na bhagava samannassa hoti. Appampi ce samhita bhasamano, dhammassa hoti anudhammacari raganca dosanca pahaya moham, sammappajano suvimuttacitto1 anupadiyano idha va haram va, sa bhagava samannassa hoti.

Verse 19: Though he recites much the Sacred Texts (Tipitaka), but is negligent and does not practise according to the Dhamma, like a cowherd who counts the cattle of others, he has no share in the benefits of the life of a bhikkhu (i.e., Magga-phala).

Verse 20: Though he recites only a little of the Sacred Texts (Tipitaka), but practises according to the Dhamma, eradicating passion, ill will and ignorance, clearly comprehending the Dhamma, with his mind freed from moral defilements and no longer clinging to this world or to the next, he shares the benefits of the life of a bhikkhu (i.e., Magga-phala).

1. suvimuttacitto: Mind freed from moral defilements; this has been achieved through perfect practice and clear comprehension of the Dhamma.

2. sa bhagava samannassa hoti: lit., shares the benefits of the life of a samana (a bhikkhu). According to the Commentary, in this context, it means, "Shares the benefits of Magga-phala."

The Story of Two Friends

While residing at the Jetavana monastery, the Buddha uttered Verses (19) and (20) of this book, with reference to two bhikkhus who were friends.

Once there were two friends of noble family, two bhikkhus from Savatthi. One of them learned the Tipitaka and was very proficient in reciting and preaching the sacred texts. He taught five hundred bhikkhus and became the instructor of eighteen groups of bhikkhus. The other bhikkhu striving diligently and ardently in the course of Insight Meditation attained arahatship together with Analytical Insight.

On one occasion, when the second bhikkhu came to pay homage to the Buddha, at the Jetavana monastery, the two bhikkhus met. The master of the Tipitaka did not realize that the other had already become an arahat. He looked down on the other, thinking that this old bhikkhu knew very little of the sacred texts, not even one out of the five Nikayas or one out of the three Pitakas. So he thought of putting questions to the other, and thus

embarass him. The Buddha knew about his unkind intention and he also knew that as a result of giving trouble to such a noble disciple of his, the learned bhikkhu would be reborn in a lower world.

So, out of compassion, the Buddha visited the two bhikkhus to prevent the scholar from questioning the other bhikkhu. The Buddha himself did the questioning. He put questions on jhanas and maggas to the master of the Tipitaka; but he could not answer them because he had not practised what he had taught. The other bhikkhu, having practised the Dhamma and having attained arahatship, could answer all the questions. The Buddha praised the one who practised the Dhamma (i.e., a vipassaka), but not a single word of praise was spoken for the learned scholar (i.e., a ganthika).

The resident disciples could not understand why the Buddha had words of praise for the old bhikkhu and not for their learned teacher. So, the Buddha explained the matter to them. The scholar who knows a great deal but does not practise in accordance with the Dhamma is like a cowherd, who looks after the cows for wages, while the one who practises in accordance with the Dhamrna is like the owner who enjoys the five kinds of produce of the cows*. Thus, the scholar enjoys only the services rendered to him by his pupils but not the benefits of Magga-phala. The other bhikkhu, though he knows little and recites only a little of the sacred texts, having clearly comprehended the essence of the Dhamma and having practised diligently and strenuously, is an 'anudhammacari'**, who has eradicated passion, ill will and ignorance. His mind being totally freed from moral delilements and from all attachments to this world as well as to the next, he truly shares the benefits of Magga-phala.

Then the Buddha spoke in verse as follows:-

Verse 19: Though he recites much the Sacred Texts (Tipitaka), but is negligent and does not practise according to the Dhamma, like a cowherd who counts the cattle of others, he has no share in the benefits of the life of a bhikkhu (i.e., Magga-phala).

Verse 20: Though he recites only a little of the Sacred Texts (Tipitaka), but practises according to the Dhamma, eradicating passion, ill will and ignorance, clearly comprehending the Dhamma, with his mind freed from moral defilements and no longer clinging to this world or to the next, he shares the benefits of the life of a bhikkhu (i.e., Magga-phala).

To be cont.....

अलख ज्यन्ति समारोह

समस्त प्रभु प्रेमियों को ज्ञात हो कि पावन श्री अलख ज्यन्ति समारोह 9-10 दिसंबर को मनाया जा रहा है। कार्यक्रम इस प्रकार है:-

दिन शुक्रवार 09 दिसंबर 2016

भजन-गायन..... सायं 3 से 5 बजे तक

सत्संग..... सायं 5 से 6:30 तक।

दिन शनिवार 10 दिसंबर 2016

गुरू पूजन..... प्रात: 05 बजे ।

सत्संग..... प्रात: 10 से 12 बजे तक ।

प्रवचनकर्ता
परम पूज्य स्वामी श्री विशेषानंद जी

स्थान- अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी आश्रम माहिलपुर

11 दिसंबर को Second Sunday का सत्संग प्रात: 10 से 12 बजे तक होगा।

नोट:- अभ्यास:- 1 दिसंबर से 8 दिसंबर तक। (समय शाखानुसार)
मौसमानुसार बिस्तर व वस्त्र साथ लाएं जी।
अधिक जानकारी के लिए Log in करें aavpashram.com पर.

बाल अंताक्षरी

5 वर्ष से 12 वर्ष तक के बच्चे दोहा अंताक्षरी की तैयारी करके 7 दिसंबर शाम 6 बजे तक आश्रम में पहुंच जाएं। समय पर न पहुंचने पर अंताक्षरी में प्रवेश नहीं मिलेगा

सत्संग सूचना

27 नवंबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी। **स्थान :** गली न० 3 सामने आंचल पैलेस, मनवाल बाग पठानकोट **समय :** प्रात: 11 से 01:00 तक।

प्रार्थी : श्री, प्रेम गुप्ता **सम्पर्क सूत्र :7508171005**

सत्संग लेने हेतु विधान निर्माण

ज्ञात हो कि श्री गुरू महाराज जी के प्रवचनों का आयोजन करवाने के लिए विधान निश्चित करने संबंधी एक महत्व पूर्ण बैठक 9 दिसंबर को होगी।